श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली

3024

रचनाकार

आचार्यप्रवर श्री "रत्नचन्द्रजी" महाराज

प्रकाशक

सम्यग्-ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मूल्य—बारह आना



वीर सं० २४८६

विक्रम सं० २०१६

फरवरी १६६०

मुद्रक—

जिनवाणी

जयपुर

दो शब्द

प्रस्तुत पद्यावली के रचयिता स्वनामधन्य पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० हैं। आप का जन्म वि० सं० १८३४ वै० सुद पंचमी को जयपुर राज्यान्तर्गत कुड़ नामक एक छोटे से गांव में हुआ था। आप के पिता का शुभ नाम लालचन्द्रजी तथा माता का नाम हीरादेवी था। आप बड़जात्या गोत्रीय श्रावगी थे। आपकी शरीर रचना सुन्दर और आकर्षक थी, जिससे पारिवारिक जनों एवं कुटुम्बियों को बड़ा ही गौरव था। यही कारण था कि आपका नाम रत्नचन्द्र रक्खा गया।

जब आप कुछ बड़े हुए तो नागोर निवासी सेठ गंगारामजी बड़जात्या पुत्र न होने के कारण आपको दत्तक के रूप से अपने यहां ले आए और बड़े लाड़ प्यार से रखने लगे।

कालकी गति विचित्र है—यह लाड़ प्यार कुछ अधिक दिनों तक भी नहीं चल पाया कि एक दिन अकस्मात् आपके पिता गंगारामजी का देहावसान हो गया। रत्नचन्द्रजी की उस समय अवस्था बहुत छोटी थी और वे प्राथमिक पाठशाला में पढ़ने के लिए भर्ती हुए थे। किन्तु पढ़ने के बजाय खेल कूद में ही मन अधिक लगता था।

उस समय नागोर में पू० श्री गुमानचन्द्रजी म० सा० विराजमान थे। समय २ पर आप सन्त सेवा में भी आया जाया करते और अवस्था के अनुकूल धर्मकार्यों में रसलेते थे। एकरात में आप सन्त

बोले कि महापुरुषों का यही आशा - द त साधु अन्तर बनूंगा।

आपको यह अच्छी तरह मालूम था कि साधुता ग्रहण की आज्ञा माताजी नहीं दे सकती, क्योंकि उनके निःसंतान होने के कारण ही आप यहां दत्तक आए थे और आपसे उनकी बड़ी २ आशाएं थीं; जो किसी माता को अपने पुत्र से हो सकती है। अतः आपने अपने चाचा नाथूरामजी से पूछा कि आपकी आज्ञा हो तो मैं आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म० के पास संयम ग्रहण करूं। य सुनकर नाथूरामजी ने कहा संयम साधना कोई आसान का नहीं है। बड़े २ दिलवाले भी इसकी आराधना में सिहर उठते हैं तुम्हारी क्या अवस्था और व्यवस्था है कि तुम इसे पाल लोगे इस पर आपने कहा कि आप आज्ञा देवें तो मैं इस कार्य में अवश्य सफलता प्राप्त करूंगा ऐसा मेरा विश्वास है। आपके दृढ़ निश्च और साहस को देखकर नाथूरामजी ने आज्ञा प्रदान करदी। उ का पूरा सहयोग रहा। उन्होंने कहा पीछे का मैं निपट लूंगा।

चाचाजी की उत्साहवर्धक बात सुनकर आपका मन मयूर नाच उठा। आप अपने संकल्प को पूर्ण करने चल दिये। जोधपुर के पास मंडोर में जो कभी मारवाड़ की राजधानी का स्थान था मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० के पास वि० सं० १८४८ वैसाख शु० पंचमी को नागादरी के स्थान पर आपने श्रमण दीक्षा ग्रहण करली। दीक्षा के समय आपकी अवस्था मात्र चौदह वर्ष की थी। ऐसी छोटी आयु में जो खेल कूद की आयु होती है, आपने सबसे मुंह मोड कर योग का कठिनतम जीवन धारण कर लिया। यह पराकाष्ठा का साहस और अनुपम त्याग का अनूठा उदाहरण है।

आपकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। किसी भी विषय का अभ्यास आपके लिए सरल और सहज था। बहुत थोड़े समय में ही आपने साधु जीवन के विधि विधान का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात मंडोर से विहार कर आप जोधपुर पहुँचे, जहाँ पू० श्री दुर्गादासजी म० कुछ वर्षों से स्थिरवास विराजमान थे। परमस्थविर मुनि श्री दुर्गादासजी म० ने मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० के साथ आपको मेवाड़ मालवा की ओर विहार की आज्ञा प्रदान की, तदनुसार गुरु महाराज की सम्मति पाकर सब सन्तों ने सोत्सव होकर मेवाड़ की ओर विहार किया और वि० स० १८४६ का चातुर्मास आपने भीलवाड़ा (मेवाड़) में किया। वहां पर आपने भगवान नेमनाथस्वामी की स्तुति रचना की।

आपका रत्नचन्द्र नाम सदा सार्थक और अनमोल रहेगा।

आपके पदों को तीन भागों में बांटा गया है—स्तुति, औपदेशि और धर्म कथा। स्तुति प्रकरण में अवसर्पिणी काल में ह वाले तीर्थंकर जैसे भगवान, ऋषभदेवजी, धर्मनाथजी, शान्तिन जी, नेमनाथजी, पारसनाथजी, महावीरस्वामीजी तथा महाविदे में विचरण करने वाले वर्तमान तीर्थंकर सीमधरस्वामीजी अ के स्तुति पद हैं। इनमें नेमीनाथजी और पारसनाथजी के विशेष संख्या में हैं।

भाव विभोर या तन्मय होकर भगवान का गुणगान क यह वाचिकभक्ति या गुणस्तुति है। इस स्तुति के भक्त अपनी लघुता को भजनीय की महत्ता, विशेषता अतिशयता के सम्मुख सकोच भावों से समर्पण कर कृत्य बन जाता है। भावविह्वल भक्त अपनी एकान्त भ और निर्मलश्रद्धा से उस विराट, चिरन्तन और शुद्ध

उपाध्याय श्री हस्तिमलजी म० सा० आदि अजमेर में विराजते थे तब स्थविर मुनि श्री अमरचन्दजी म० के साथ अजमेर जाने का अवसर मिला। उस समय वहाँ पर विराजमान स्वर्गीय महासतीजी श्री छोगाजी म० की सुशिष्या श्री केवलकुंवरजी तथा सुंदरकुंवरजी से पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री के रचित सब ही स्तवनों का संग्रह उनके पास विद्यमान है। वि० सं० २६११ के अजमेर चातुर्मास के समय इसकी पाण्डु लिपि कराने का विचार हुआ। इसी विचार को कार्य रूप में परिणत करने के लिए स्थानीय 'जैन ज्योति' के संपादक श्री जीतमलजी चौंपड़ा को कहा गया उन्होंने प्रतिदिन एक घंटा अवकाश देकर तदनुसार लगभग ३ महीने में इस संग्रह को तीन विभागों (१) स्तुति विभाग (२) औपदेशिक विभाग एवं (३) चरित्र विभाग—लिखकर तैयार किया।

प्रतियों का परिचय—

(१) आचार्य श्री के पदों की एक प्रति (उपाध्याय श्री हस्ती-मल जी म० के पास है जिसमें ६० स्तवनों का सुन्दर संग्रह उप-लब्ध है। पत्र संख्या १८—स्वयं आचार्य श्री रत्न चन्द जी म० की हस्त लिखित प्रति भी है तथा इनके अतिरिक्त आचार छत्तीसी उपदेश छत्तीसी आदि ४ छत्तीसीयां है प्रति प्रायः शुद्ध है—लेखक का नाम-निर्देश नहीं है।

(२) दूसरी प्रति महासती जी की—पत्र संख्या १६—स्तवन संख्या ११४—इसमें दो पद अपूर्ण है। लेखक का निर्देश नहीं है सं० १६६२ का चैत्र शु० रविवार को सम्पूर्ण।

आपका रत्नचन्द्र नाम सदा साधक अनमोल र गा।

आपके पदों को तीन भागों में बांटा गया है–स्तुति, औप, और धर्म कथा। स्तुति प्रकरण में अवसर्पीणी काल में वाले तीर्थंकर जैसे भगवान, ऋषभदेवजी, धर्मनाथजी, शा जी, नेमनाथजी, पारसनाथजी, महावीरस्वामीजी तथा मह में विचरण करने वाले वर्तमान तीर्थंकर सीमधरस्वामीजी के स्तुति पद हैं। इनमें नेमीनाथजी और पारसनाथजी विशेष संख्या में हैं।

भाव विभोर या तन्मय होकर भगवान का गुणगान यह वाचिकभक्ति या गुणस्तुति है। इस स्तुति के भक्त अपनी लघुता को भजनीय की महत्ता, विशेषता अतिशयता के सम्मुख सकोच भावों से समर्पण कर कृत्य बन जाता है। भावविह्वल भक्त अपनी एकान्त और निर्मलश्रद्धा से उस विराट, चिरन्तन और शुद्ध

मुक्त के प्रति अपना तादात्म्य या स्नेहानुबन्ध प्रगट करते हुए विराटता की कामना करता है। जैसे बिन्दु सरित् प्रवाह के द्वारा सिन्धु में मिलकर सिन्धुत्व का पद पालेती है वैसे भक्त भी अपनी निश्छल भक्ति रूप स्तुति से भगवान बन जाता है। जब लौकिक स्तुति भी फलदायक होती है तब अलौकिक स्तुति की तो बात ही क्या? स्तुति द्वारा भगवत् सान्निध्य लोह का पारस-मणि के स्पर्श तुल्य है। इस प्रकार स्तुति प्रकरण में आपने गुणातीत के अलौकिक गुणों का मधुर गायन प्रस्तुत किया है जो हृदयाकर्षक और मधुरता से ओत प्रोत है।

दूसरा औपदेशिक भाग है। इसमें आपने उपदेशों के द्वारा पुण्य पाप और आत्मा परमात्मा तथा बन्ध मोक्षादि भावों का सुन्दर चित्रण किया है। साधु संघ की आचारशुद्धि के लिए भी आपने प्रबल प्रेरणा की है। जिस प्रकार शुभ कर्म का परिणाम शुभ और अशुभ का अशुभ होता है तथा कषायादि सेवन से आत्मा की ज्योति मंद पड़ती और त्याग से ज्योति प्रज्वलित होती है आदि भावों का प्रदर्शन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। आचार-निष्ठ साधक के उपदेश का प्रभाव मन पर गहरा असर डालता है क्योंकि वह एक अनुभूत सत्य और शिवरूप होता है। यही कारण है कि आपके औपदेशिक पद अर्जुन के तीर की तरह मन पर गहरे असर डालने वाले हैं। गहन से गहन विषयों को भी आप अपने उपदेश के द्वारा सरलता से हृदयंगम कराने में सफल सिद्ध हुए हैं वस्तुतः आपकी पैनी दृष्टि और सद्भावना सराहनीय है।

हृदय की वाणी या भावना है जिसका उद्देश्य सदा लोकहित ही रहा है! अतः यह मुमुक्षु जनों के लिए हितावह और लाभदा सिद्ध होगी इसमें कुछ संशय नहीं।

पांडुलिपि—जैन स्तुति, श्रावक नित्य नियम, प्राभा मंगल प्रार्थना आदि पुस्तकों में आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० कुछ स्तुति रूप आध्यात्मिक पद प्रकाशित हुए हैं, जिनको लोग सामायिक व नित्यनियम के समय भक्ति-रस में वि होकर पढ़ते हुए देखे जाते हैं—उनको देखकर मनमें संक पैदा हुआ कि आचार्य श्री के सभी पदों को एक साथ संकलन प्रकाश में लाया जाय तो पाठकों को पढ़ने के लिए सुलभ जायगा। वि० सं० २०१३ का चातुर्मास भीनासर गंगासर में सम कर जब फाल्गुण वदी में उपाचार्यश्री गणेशीलालजी म०

उपाध्याय श्री हस्तिमलजी म० सा० आदि अजमेर में विराजते थे तब स्थविर मुनि श्री अमरचन्दजी म० के साथ अजमेर जाने का अवसर मिला। उस समय वहाँ पर विराजमान स्वर्गीय महासतीजी श्री छोगाजी म० की सुशिष्या श्री केवलकुंवरजी तथा सुंदरकुंवरजी से पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री के रचित सब ही स्तवनों का संग्रह उनके पास विद्यमान है। वि० सं० २९१४ के अजमेर चातुर्मास के समय इसकी पाण्डु लिपि कराने का विचार हुआ। इसी विचार को कार्य रूप में परिणत करने के लिए स्थानीय 'जीत ज्योति' के संपादक श्री जीतमलजी चौपड़ा को कहा गया उन्होंने प्रतिदिन एक घंटा अवकाश देकर तदनुसार लगभग ३ महीने में इस संग्रह को तीन विभागों (१) स्तुति विभाग (२) औपदेशिक विभाग एवं (३) चरित्र विभाग—लिखकर तैयार किया।

प्रतियों का परिचय—

(१) आचार्य श्री के पदों की एक प्रति (उपाध्याय श्री हस्ती-मल जी म० के पास है जिसमें ६० स्तवनों का सुन्दर संग्रह उप-लब्ध है। पत्र संख्या १८—स्वयं आचार्य श्री रत्न चन्द जी म० की हस्त लिखित प्रति भी है तथा इनके अतिरिक्त आचार छतीसी उपदेश छतीसी आदि ४ छतीसीयां हैं प्रति प्रायः शुद्ध है—लेखक का नाम-निर्देश नहीं है।

(२) दूसरी प्रति महासती जी की—पत्र संख्या १६—स्तवन संख्या ११४—इसमें दो पद अपूर्ण है। लेखक का निर्देश नहीं है सं० १९६२ का चैत्र शु० रविवार को सम्पूर्ण।

साथ में परिशिष्ट विभाग भी जोड़ा गया है जि.
श्री के सम्बन्ध में रचित अन्य पद जो भिन्न भिन्न
भिन्न भिन्न कवियों के द्वारा श्रद्धांजलि रूप में अथवा
में लिखे गए हैं—पाठकों के पठनार्थ जोड़े गए हैं। इन
आचार्य श्री हमीरमलजी म० महासतीजी श्री मं।
नगनाजी व संभुनाथ सेवक आदि के हैं।

आचार्य श्री के जीवन की विशेष बात का उल्लेख
शेष रह गया है वह निम्न प्रकार हैः—

आचार्यश्री ने वि० सं० १८५८ में दीक्षा ग्रहण
दीक्षित होकर पहले ही वर्ष १८५९ में आपने काव्य -
कर दी। आपके द्वारा रचित विशाल संग्रह में 'श्री नेमि
स्तुति' पद भिलाडा चौमासा वि० १८५९ में रचे जाने क
है (देखिए पद संख्या ४७) ६१–६२।

महाराज श्री के अनेक पद हिन्दी साहित्य के
कबीरदास व सूरदास सदृश छोटे किन्तु मानस
देने वाले हैं आपकी रचनायें राजस्थानी (ढूंढाडी

मिश्रित) भाषा का उत्कृष्ट नमूना है। साधु की अथवा निस्पृही त्यागीजन की भाषा में जो स्पष्ट वादिता होनी चाहिए वही आपकी रचनाओं में वर्तमान है। आप जिस प्रकार वेश से साधु थे, विचारों के अक्कड़ एवं स्पष्टवादी थे—जो साधु की भाषा में होना अनुपयुक्त नहीं। साधु को संसारी जीवों से, उनके विशेषणों से लगाव भी नहीं होना चाहिए। कह सकते हैं जिस तरह हिन्दी साहित्य में संत कबीरदास ने अपनी साधुक्कड़ी एवं अक्खड़ भाषा में संसारी प्राणियों को अपनी अमूल्य निधि भेंट की है उसी प्रकार आचार्यश्री ने भी साधु जीवन, संयमित जीवन को श्रीजिनमार्ग पर सीधे सच्चे रूप में चढ़ने को चैलेंज (challenge) दिया है। आप आचार्य गुमानचन्द्रजी म० के शिष्य थे। इसलिए आप प्राय प्रत्येक पद में गुरुदेव के पुनीत नाम का संस्मरण करते हैं साथ में बहुत से पदों में संवत् और रचना स्थानों का भी उल्लेख किया है।

आप विशेष समय गुरुदेव की सेवा में रहे। गुरुदेव का स्वर्गवास होने के पश्चात् पूज्य दुर्गादासजी म० की सेवा में रहे। और सम्प्रदाय की व्यवस्था करते रहें। पू० दुर्गादासजी म० के स्वर्गवास के पश्चात् चतुर्विध संघ ने आपको आचार्य पदारूढ़ किया।

लाल भवन, जयपुर
श्री पार्श्वनाथ-जयन्ति
सं० २०१६

—लक्ष्मीचन्द्र
मुनि

रखने के कारण कार्य धिमी गति से चलता रहा, फिर भी में काफी अशुद्धियां रह गई है। जिसका शुद्धि-पत्र अलगसे गया है।

प्रस्तुन पुस्तक के प्रकाशन में धूलिया निवासी श्री • • गणेसदासजी चौधरी द्वारा २००) श्री सुगनचन्दजी श्री॰ मद्रास निवासी द्वारा १०१) श्री अमरचन्दजी भवरलालजी वालो द्वारा ५०) एवं एक गुप्तदानीजी जयपुर द्वारा २००) रुपया ५५१) सहायतार्थ प्राप्त हुवे हैं। एतदर्थ सहायता दात को धन्यवाद।

निवेदक

जयपुर मंत्री की ओर

भँवर लाल बे

श्री रत्नचन्द्र पद मुक्तावली

पद्यानुक्रमणिका

स्तुति विभागः—

औपदेशिक विभाग

परिशिष्ट

	`	५	शुद्ध
१	२	एहज	एहिज
१	६	वन्दु	वन्दूँ
१	१६	.....	...
४	१०	'सी'	क्या के अर्थ प्रयुक्त हुआ
४	१३	एर–समोरस	एरस–मोर
५	४	ऊत्तर	उत्तर
६	६	संपत	संपत
१०	१०	दूसरे पद 'अवर' के साथ	ले जोड़कर
११	भजन संख्या (१२) की दूसरी	घर	घट
१४	१२	पाम्पा	पाम्या
१५	अंतिम	अन्नते	अनन्ते
१५	,,	मित्था	मिथ्या
१६	११	उधांरिया	उधारिया
१७	७	तीरे	तजे
१७	१०	गणा	घणा
१८	१	गणो	घणो

१८	२	१९५० में	अठारा पचास में
१६	१	संग्रहाजी	ने संग्रहाजी
१६	६	सुमेहणी	सि मेहणी
१६	६	तुम	तू
२२	१२	समझो	समझे हो आप
२४	१०	मिथ्यात	मिथ्यात
२४	१२	उच्छाह	उच्छह हो
२६	६	पारसनाथा	पारसनाथ
२७	३	तरी	तारी
२७	४	सहस्त्र	सहस्त्र
२७	१२	आप	आए
२८	१८	दीजिए	दीजिये
३१	११	अपना	आपना
३२	३	पण	वो पण
३४	२	घर	घर
३५	७	आंख डाली	आंखडली
३५	७	तुम	तुम
३६	३	प्रात: प्रात:	प्रात प्रात
३६	८	कपिलपुर	कंपिलपुर
३८	अंतिम	मृत्य	मृत्यु
३६	३	रया	रह्या
४१	१४	चावो	चावो

४६	७	तपिरया	तपिया
४६	१५	पू	पूज्य
४३	१७	पीपड	पीपाड
५२	२	ओलखया	ओलख्या
५२	४	निरधनियों	निरधनियो
५२	५	कहता	कहतां
५३	६	छः	छे
५४	१२	जी ावर	जिनवर
५५	१२	रां	रा
५८	अंतिम	जग	जगत
६०	७	थालियो	थालियो हो
६१	१३	आयो	आयो हो
६२	१२	आभूपणं	आभूषण
६३	७	चणया	चण्या
६३	५	करुणां	करुणा
६३	५	रस	रथ
६३	१०	पुन	पून

६४	४	उतराध्यन	उतराध्ययन
६५	५	ग्रह	ग्रहे
६५	१०	निखरी	निरखी
६६	१३	सभी	सनी
६६	१४	दुखनी	दूखनी
७०	४	काजेए	काजे
७४	२	धर्म तणो	धर्म तणो तो
७४	१०	वैरतणी	वैतरणी
७४	११	जनमत	जन्म तैं
८०	१	ईद	इन्द
८०	८	कुड	कूड
८१	५	हुआ	हुआं
८५	६–७	उपाद	उपाध
८७	८	तीरयो	तिरियो
८७	१०	आने	आवे
८६	६	चेलापति	चेलायति
६१	२	सूंख	सूंस
६१	५	खढा	खड़ा
६२	१३	चकडोल	चकडोल
६४	५	अन	अन्त

६७	८	भवियण	भवियणा
१००	६	सिढी	सीढी
१०८	२	नरपति	नरपति
११४	४	मारने	मारे ने
११४	१३	वारे	चोर
११५	३	मनमांस	मदमांस
११५	५	सयो	समो
११५	१०	श्रणपारो	श्रणपारो
११५	१२	ऊंठ	ऊंट
११५	१५	गरचंतो	गरजंतो
११६	३	पञ्चखाण	पच्चखाण
११६	४	डुट	दूट
११७	८	रह्यो	रह्यी
११७	६	तिहरो	तिहारो
११७	६	सारिया	साहिया
११७	१५	महिया	साहिया
११८	१	मुफके	मूफ के
११८	२	भमारियो	भमायियो

१२०	८	ज्यों भरिये	ज्यों जल भरिये
१२४	५	देव	देवे
१२६	१७	जीवढला	जीवडला
१२७	८	जीवडल	जीवडला
१२७	१०	जलस	जलूस
१२८	४	चड़	चढ़
१२६	१०	सभी	सभी
१३६	५	कारच	करगच
१४६	१०	केह	के
१५०	२	घम	धर्म
१५४	५	घरणी	धरणी
१५५	१२	छुटे	छूटे
१५७	११	से	हो
१५८	७	म	में
१५८	६	पायो	पायो हो
१५६	शीर्षक	अविचन्ह	अविचल प्रेम
१६०	३	पामी	पामी
१६२	५	हयरा	रह्या
१६३	४	जहना	जेहना
१६५	३	जाणच	जाणिचा

नोटः—काना, मात्रा, ह्रस्व, दीर्घ आदि रह गये हैं जैसे मैं छः का छे हूं का हूँ गणो का घणो आदि इन्हें शुद्ध करके पढ़ने की कृपा करें।

स्तु
ति
स्तुति वि भा ग
भा
ग

(१)

महामंत्र महिमा

(तर्ज—जीवो तूं शियल तणो कर रंग)

जीवरे, तूं जाप जपो नवकार ॥टेर॥

और नाम असार है सबला, एहिज छे तंत सार॥जी०॥

चोंतीस अतिशय पेंतीस वाणी, सेवे सुर नर कोड़
चक्री हलधर अरु नरनारी, सेव करे कर जोड़ ॥जी०॥१॥

देव एक अरिहंत तेहीज, राग द्वेष क्षय कीन
प्रथम पद मांही ते वन्दु, टाले कर्म मलीन ॥जी०॥२॥

सिद्ध सोही जाय विराजिया, मुगति महल मझार
कर्म काया भर्म काटने, निरंजन निराकार ॥जी०॥३॥

तीजे पद आचारज वंदू, गुण छत्तीसे सोभ
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, निर्भय तिणथी होय ॥जी०४॥

चोथे पद उवज्झाय मुनिवर, ज्ञान तणा भंडार
चार संघने प्यार धरने, सूत्र ना दातार ॥जी०॥५॥

पांच में पद साधुजी नमे, पाले पंचाचार
दोषण टाले कर्म वाले, ले निर्दोषण आहार ॥जी०॥६॥

पंचही परमेष्ठी समरूं, पंचम गति दातार

चोर अंध समान हुवे, विष अमृत जेम
दुःख दाई काम मांही, वरते कुशल अरु चेम ॥जी॥१
शेष सहस जीभ करिने, सुरपति आप विसेक
गुण गावे तो पार न पावे, म्हारी जीभ छे एक ॥जी॥
कोन गिणे अम्बर तारा, मेरू कुण तोलंत
सर्व उदधी पार लहीये, पिण तुम गुण पार न लहंत॥
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसादे किधी ढाल रसाल
प्रातः प्रात उठी नित सिंवरूं, नमो नमो त्रिकाल ॥जी१
संवत अठारे वरस चोपने, पोस मास मझार
वडलू मांही शुक्ल पच में, संथर्‍यो नवकार ॥जी॥१४।

---

(२)

गुरु प्रेम

(तर्ज—धनाश्री)

जाण्यो थांरो भाव प्रभुजी, जाण्यो थांरो भाव ॥टेर॥
ोतम अर्ज करे प्रभु सेती, मेल्यो इण प्रस्ताव हो ॥जा०॥१।

छ्टेमल दएढ ।

शिव नगरी कायम की विरिया, मोसुं कर गया डाव हो ॥जा२॥
बालक भाव करी तुम सेती, करतो नहीं अटकाव हो ॥जा॥३॥
एक रूखी प्रीत करे किम चेतन, इण में लाव न साव हो॥जा४
करी केवल निज रूप 'रतन' नित, मेट चपल चित चाव हो॥जा५

---

(३)

भक्त प्रार्थना

(तर्ज—धनाश्री)

अब मोरी सहाय करो जिनराज ॥अब॥टेर॥
काल अनंत रूल्यो भव भव में, अब मेटिया महाराज॥अ॥१॥
ओ संसार दुःखां रो सागर, कर्म करे बेकाज
आपो भूल आप दुःख पावे, भूल न आवे लाज ॥अ॥२॥
कारण बिन कारज सिद्ध नाहीं, तुम गुण कारण जहाज
भव दरियाव मांही बूडंतां, हाथे आई पाज ॥अ॥३॥
दीन, अनाथ, दुरबल जाणीने, राखीजो मुझ लाज,
'रतन' जतन सुध संजम गुण बिन, सरे न एको काज ॥अ॥४॥

निठुर थयो साहिब सांवरियो, छिन में ही छिटकाई जी ॥
मन की बात रही मन मांहीं,पूछ सकी नहीं कांई जी ॥नि
जगत शिरोमणि जादव के पति, कृष्ण सरिखा भाई जी
तिनकी लाज रही कहो कैसे, यादव जान लजाई जी ॥नि
जो कोई खून हुवे मुझ अन्दर, तों देऊ साख भराई जी,
पिण जग में कहो न्याय करे कुण, जो होवे राय अन्याई जी
जो विरक्त रस भाव विशेषे, तो क्यों जान बणाई जी
पशुवन के सिर दोष दई गए, ये लागी कपटाई जी ॥नि॥
तुमने सीख दिये कहो कैसी, कहतां होवे लघुताई जी,
सब सज्जन की सी रही सूनी, आ देखी चतुराई जी ॥नि।
नेम बिना तो नेम जिहां लग, प्राण रहे घट मांही जी,
सज्जन भाव करी तुम सेती, कहुँ छु वचन दुःखाई जी ॥नि
एर समोरस वयणे गायो, ताकी ए अधिकाई जी
'रतनचन्द' कहे धन्य सतवंती जगत गिएयो सहू भाई जी॥नि

---

(५)

राजमती प्रार्थना

(तर्ज—काफी होली री)

नेमीश्वर मुझ अर्ज सुणीजे,
वालेसर मुझ अर्ज सुणीजे ४ ।।ने।।टेर।।
घर में हाण लोक में हांसो, एहवो काम न कीजे,
किम आए किम फिर गए पाछे, इनको उत्तर दीजे ।।ने।।१।।
त्याग तणो फल उत्तम जाणी, तिणसुं संजम लीजे,
मांग गयां सहु महातम बिगड़े, सो गिणती न गणीजे।।ने।।२।।
पशुअन पीड़ दया दिल धरने, जिण सुं रथ फेरीजे,
तो हूँ अबला भूलूं अलबेसर, तिणरी गिणत न कीजे ।।ने।।३।।
अबला आश निराश किया सुं, छिनक छिनक तन छीजे,
निर्मोही के मोह न व्यापे, किणने जाय कहीजे ।।ने।।४।।
राजल एम विलाप कियो अति, मुख सुं कह न सकीजे,
'रतन' जतन सुध नेम निभायो, जिणसुं कीरत कीजे ।।ने।।५।।

---

(६)

शांतिनाथ प्रार्थना

(तर्ज—प्रभाती)

'लाय भ्रम के बादल, परमारथ पद पवन करी
अवर देव एरंड कुण रोपै, जो मन्दिर गुण-केल फली ॥४
प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर, तो सुं करिए कर्म अरी
'रतनचन्द' शीतलता व्यापी, पातक लाय कषाय टरी ॥५।

---

(७)

शान्तिनाथ स्तुति

(तर्ज—प्रभाती)

तूं धन तूं धन तूं धन तूं धन शान्ति जिनेश्वर स्वामी
मिरगी मार निवार कियो प्रभु, सर्व भणी सुख गामी ॥१।
अवतरिया अचलादे उदरे, माता साता पामी
शांति शांति जगत वरताई, सर्व कहे सिर नामी ॥२॥
तुम प्रसाद जगत सुख पायो, भूले मूढ हरामी
कंचन डार कांच चित देवे, यांकी बुद्धि में खामी ॥३॥

ऊशिद ।

अलख-निरंजन मुनि-मन-रंजन, भयभंजन विसरामी
शिवदायक लायक गुण खायक, त्रायक है शिव गामी ॥४॥
'रतनचंद' प्रभु कछुअ न माँगे, सुन तू अन्तरयामी
तुम रहवन की ठौर बता दो, तो हूँ सहु भर पामी ॥६॥

---

(८)

वीर वाणी

(तर्ज—राग काफी)

वाणी थारी वीरजी, मीठी म्हाने लागे हो ॥टेर॥
गणधर वाणी सुणी निज श्रवणे*, उभा ही घर त्यागे हो ॥
वा ॥१॥
मोह मिथ्यात्व की नींद अनादि, सुण सुण वाणी जागे हो,
मोह महीपत चोर लुटेरो, सो तो तत्क्षण भागे हो ॥वा२॥
रागद्वेष अनादि तणो मल, भरियो पूरण अथागे हो,
सो तुम वेण ओषध सुं तत्क्षण, निर्मल हुवे महाभागे हो
वा ॥३॥
ठाकर सवल जाणने चाकर, 'रतन' अमोलक मांगे हो,

- ।।४। अमृत जाण , परम पीयूष* समाणी
श्री।
क्रोध कषाय की लाय बुझावण निर्मल अमृत पाणी रे
श्री।
ज्ञान ध्यान शीतलता व्यापी, रोम रोम हुलसानी रे
श्री।.
रोग असाध्य विषम ज्वर मेटन,अमृत जड़ीय एहाणी(
रे जीव श्री।।
करम भरम की घटिय विषमता, मन की तपत मिटा
रे जीव श्री।।
अक्षय खजानो अगणित दौलत, घट ही में प्रकटानी रे ज
श्री।।६
'रतनचन्द' धन्य सतगुरु वाणी, घट गई कुमत पुराणी
जीव श्री।।७।

---

* अमृत ।

(१०)

सच्ची आशा

एक आश भली जिनवर की ॥टेर॥

छांड़ कृपानिधि करुणा-सागर, कुण करे आश अवर की ।
एक ॥१॥

अमृत छांड विषय जल पीवे, ज्यांकी अकल हिया की सरकी
टुक भर महर हुवे जिनजी की, तो पदवी देय अमर[1] की
एक ॥२॥

सूकर[2] कूकर[3] टुक के कारण, सेरी तके घर घर की
पेट भरे, न मिटे मन तृष्णा, अन्तर लाय फिकर की॥एक३॥
कुण पितु मात पिता भ्रात (सुत) जोरू, किणने लड़का लड़की
जम के द्वार तणां अगवाणी, तूं खोल हिया की खिड़की
एक ॥४॥

कृपा होय मो पर जिनजी की, निज संपत आकर[4] की
"रतनचन्द" आनंद भयो अब, चाह घटी पुद्गल की
एक ॥५॥

इम किम छोड चले मोय, जादव दीन दयाल ।।टेर।
छप्पन क्रोड यादव मिल आये, लाए जान रसाल ।।इ
हिए हार कानां विच कुंडल, गल मोतियन की माल।
सांवली सूरत मोहनी मूरत, इंदचंद रया भाल ।।इम२
देख पशुवन दया दिल उपनी, रथ फेरयो तत्काल ।।इ
राजुल सुण मुरछागत पामी, जिम छेदी चम्पक नी ॥
सखी सहेलियां लागी समझावी, राजुल पड़ीए जंजाल ।।इम
खण उठे, बैठे, खण लोटे, खण नभ[1] खण पायाल[2] ।।इ
बिन ओगुण मोय किम छिटकाई, बिलबिले राजुल ब ।।इम
सखी कहे इम किम मुरझावे, अवर अवर[3] चाल ।।इम६।
काच कथिर ने ग्रहण करे कुण, "रतन" अमोलख राल।।इम१
सहस्त्र पुरुष सुं संजम लीधो, हुआ षट् काय प्रतिपाल ।।इम११

---

१ आकाश २ पाताल ३ है

घणी सखियां सु राजुल चाली,भेट्या जाय कृपाल ।।इम१२।।
नेम कंवर राजुल शिव पहुँच्या,जन्म मरण दुःख टाल।।इम१३।।
"रतनचन्द"धन्य नेम जिनेश्वर, पाय वन्दु त्रिकाल।।इम१४।।
पूज्य गुमानचन्दजी गुरु पाया,फलिय मनोरथ माल।।इम१५।।

---

(१२)

सतगुरु सेवो

सतगुरु मत भूलो एक घड़ी २ ।।टेर।।
बोध बीज भयो घर अन्दर,जीव अजीव री खबर पड़ी।।सत१।।
क्रोध कषाय री लाय बुझावण,दीधी एक संतोष जड़ी।।सत२।।
संजतिराय भेट्या सतगुरु ने,ततखण त्यागी राज सिरी।।सत३।।
पापी पूर हुवो परदेशी, केशी तार्यो हर्ष धरी ।।सत०४।।
"रतनचन्द" कहे सतगुरु सेवो,जो थे चावो मुगतपुरी ।।सत५।।

---

(१३)

गुरु दर्शन

आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो, हर्ष हुवो मन मारो ए
माय ।।टेर।।

आज ॥३॥

मूल मिथ्यात अनादि तणी भर्म, घट में घोर अंधारो ए मा
परम ज्योत कियो इक छिन में प्रकट वचन दिनकारो ए म
आज ॥४॥

क्रोध कषाय परम दावानल, भरीयो विषय विकारो ए माय
परम अह्लाद कियो इक छिन में, वरस सघन घन धारो
ए माय ॥ आज ॥५॥

परम ज्योत प्रकटी समता की, हुओ हर्ष अग पारो ए माय
निज गुण अक्षय सम्पत आकरी, ओ मन गुरु उपकारो
ए माय ॥ आज ॥६॥

प्रेम प्रसाद कियो मुझ ऊपर, हुँ होतो निरधारो ए माय
चाकर जाण समग्र गिव सोंपी, छोड्यो, सर्व संसारो ए माय
आज ॥७॥

पूरण उरण हुवे कुण गुरु सुं, आगम में अधिकारो ए माय
गुरु पद कमल धरो शिर ऊपर, जो चावो निस्तारो ए माय
आज ॥८॥

मोती सा मलिन खांड सा खारा, आत्म सम अपियारो ए माय
अल्प कर्मी गुण कर कर हर्षे, निरखे नहीं य गिवारो ए माय
आज ॥९॥
एक जीभ सूं गुण कुण गावे, कर कर बुध विस्तारो ए माय
"रतनचंद" कहे गुरु पद मुझ शिर, क्रोड़ क्रोड़ हूँ वारो
ए माय ॥ आज ॥१०॥
आज नेण भर गुरु मुख निरख्यो, हर्ष हुवो मन मारो ए माय

---

(१४)

पार्श्वनाथ स्तुति

(तर्ज—रिडमल री देशी)

वामानन्दन पार्श्व जिनंदजी प्रभूजी सेवे थांने सुरनर वृन्द ॥टेर॥
संयम लेई ने वन में आविया हो, हां ए दर्शन देवरो हे
हिया नो सेवरो हे पारसनाथ ॥ हां ॥१॥
कोप्यो कमठ अति विकराल जी प्रभूजी आयो जहां दीनदयाल
हे काली काठल कर आभो छावीयो हे ॥ हां ॥२॥
गाजे बादल विज चमकत, मेघ अखंडित धार वरसन्त
नदियां पुराणी पाणी मावे नहीं हे ॥ हां ॥३॥
जल कर ढाकी प्रभूजी नी देह, तो पिण वरसत नहीं रहे मेह

इन्द्र समान
हे हूँ चाकर चरणां रो चाऊं चाकरी हे ॥ हां ॥७॥
लोहने करदे कनक[1] समान, ते पारस जग मांही पाषाण
हेतु पारस कर देव पदवी आखरी हैं ॥ हां ॥८॥
चिन्तामणी तूं पारस रूप, मेटो म्हारा भव जल कूप
हे जग दुःखां सुं सेवक ने तारजो रे ॥ हां ॥९॥
गिरवा सागर गुणा रा गंभीर, राखो म्हाने चरणां री तीर
हे 'रतनचन्द' री अर्ज अब धारजो रे ॥ हां ॥१०॥
पाली में किधो सुखे चोमासजी, पाम्या सहु हुल्लास जी
ये संवत अठ्ठारा ने वर्ष तिहोतरे हे ॥ हां ॥११॥

---

(१५)

नेमनाथ स्तुति

(तर्ज—आवो तो नीत म्हारा बलजी रे, आवी नागरवेल)

समुद्र विजय जी रा लाडला हो प्रभुजी यादव कुल सिणगार
सुखकारी जी, हांजी थां परवारी जी सांवरिया सायब
म्हारे हैं प्यारो प्राण अधार ॥टेर॥

---

१ सोना

तज राज संयम लियो हो प्रभुजी,चढ़िया गढ़ गिरनार ॥सु१॥
राजल मन इम चिन्तवे हो प्रभुजी, एह वो खून न कियो होय
किम आव्या किम फिर चल्या जी हो प्रभुजी, येह अचरज
छः मोय ॥सु२॥
आशा अलुकी सखी हूँ रही हो प्रभुजी, गई मनोरथ माल हो
विन गुनहे वनिता तजी हो प्रभुजी थाजो छो दीन दयाल हो
॥सु३॥
संयम ले गिरवर चढी हो प्रभुजी, प्रतिबोध्यो रहनेम हो
कर्म खपावी सिद्ध गती लही हो प्रभुजी, पूर्ण कियो प्रेम॥सु४
मुगत बधु साहब वरी हो प्रभुजी, किरत रही जग छाय
"रतनचन्द" करे वन्दना, निचो शीस नवाय ॥सु५॥

---

(१६)

सद्गुरु वाणी

(तर्ज—रमो २ हे चले कड्यां कुंदा री डोरी)

मीठी अमृत सारखी सतगुरु की वाणी, उपजे हर्ष अपार
थारी हो सतगुरु की वाणी निर्मल धर्म दिखावियो मेट्यो
मिथ्यात अंधकार ॥था१॥
शीतल चन्दन सारखी,सद्गुरु की वाणी, निर्मल खिरोदक नीर

||वा४||

चोर चिलायती चालियो, सतगुरु की वाणी, जिण छेद्यो
कन्या रो शीस

वन में गुरु उपदेश थी, सतगुरु की वाणी, मेटी जिन मन
रीस ||वा५||

इन्द्रभूती अहंकार जी सतगुरु की वाणी, आया श्री वीर ने पास
संसय छेदी छिनक में सतगुरु की वाणी, दीधो तिण ने
मुक्ति आवास ||वा६||

मेघ मुनि मन डोलियो, चाल्यो चारित्र ने चूर
वीर वचन सुण बुझियो, सतगुरु की वाणी, हुवो सत्यवादी
शूर ||वा७||

एम अनेक उधारिया, सतगुरु की वाणी, जिणरी आगम में साख
संगत शिव सुख दायनी, सतगुरु की वाणी, सुणिए मन ने
दृढ़ राख ||वा८||

रूपनगर में तिहोत्तरे, सतगुरु की वाणी आयो दो सेखे काल
"रतनचन्द" आनन्द में, सतगुरु की वाणी, किधी आढाल
रसाल ||६||

---

(१७)

श्री चन्द्रप्रभ स्तुति

(तर्ज—बड़े घर ताल लागी रे)

चन्दा प्रभु मो मन भावे रे, दूजो देव दाय न आवे रे ।।टेर।।
चंदपुरी नगरी भली रे, महासेण राय उदार ।
लिखमा राणी दीपती, ज्यांरी कूंख लियो अवतार ।।चंदा१।।
संसार ना सुख भोगवी रे, जाण्यो संसार असार ।
मन वैरागज आणने, प्रभु लीधो संजम भार ।।चंदा२।।
चंद आनंद सदा करे रे, पातिक जावे दूर ।
चंद भजे संसार तीरे तो, जावे कर्म अंकुर ।।चंदा३।।
सुर नर असुर विद्याधरूरे, इन्द्र करे जांरी सेव ।
मोटा राणा राजवी ज्यांने, नमे असंख्याता देव ।।चंदा४।।
अवर देव गणा देखिया, जठे वणा जीवां री घात ।
कहोजी कांकरो कुण लहे, ज्यांरे लागो चिन्तामणी हाथ।।चंदा५
वाणी अमृत सारखी, जाणे खीर समुद्र को नीर ।
वाणी सुण हिया में धरे तो, उतरे भवजल तीर ।।चंदा६।।
चन्द्र सरीखो को नहीं, मैं जोयो सरव संसार ।
और डूबावे संसार में जी, मोने चंद उतारे पार ।।चंदा७।।

श्री शीतलनाथ स्तुति

(तर्ज—करलखा गीत नी देसी)

श्री शीतल जिन साथवा जी सुन सेवक अरदास ।
शिवदाता विरद ताहरो तो द्यो शिवपुर वास ॥
जिनेस्वर वंदियेजी पोह उगंते सूर जिनेस्वर वंदियेजी २ ।
पामे परमानंद जिनेस्वर वंदियेजी दुख टल जावे ॥
दूरक पाप निकंदिये जी, पामे सुख भरपूर जिनेस्वर वंदियेजी॥टेर॥
छेदन भेदन तर्जना जी, मैं तो सही अनन्त ।
इण दुखमी आरे आयने, अब भेट्या भगवन्त ॥जि०१॥
तारो श्री जिनराय जी, टालो म करो कोय ।
केड़े लग्यो किम छूटसी जी, हिये विमासी जोय ॥जि०२॥
जैसे चन्द्र चकोर नु जी, मेह मगन जिम मोर ।
तुम गुण हृदा में बसे हुँ, निनका करूं निहोर ॥जि०३॥
काम भोग नी लालसाजी, थिरता न धरे मन ।
पिण तुम भजन प्रताप थी, दाजे दुरमतिवन ॥जि०४॥
लोह अड़े पारस जड़जी, सोनो न हुवे तेह ।
लोहानो सु वीगड़े पिण, पारस पड़े संदेह ॥जि०५॥

चिंतामणि संग्रहाजी, नर सुखियो नहीं होय ।
जद मनमें शंका पड़े, श्री रतन न दीखे कोय ।।जि०६।।
निशदिन सेवा सारता जी, साम सारे जो काम ।
जिणरी इवकाई किसी, पिण हुँ तार्या को नाम ।।जि०७।।
सेवक साहब ने कयांजी, काम न सारे कोय ।
चाकर ने सुमेहणी, पिण मोटा ने होय ।।जि०८।।
बालक जो हट ही करे, जी तो हारे माईत ।
हुँ बालक तुम आगले, बोलु छुं इण रीत ।।जि०६।।
चेतन तु ही तारसी जी, तुम परमेस्वर रूप ।
पिण प्रभुना गुण गावता जी, प्रगटे निज स्वरूप ।।जि०१०।।
संवत अठारे पंचावने जी मेदनीपुर शुभ ठोर ।
पूज्य गुमानचंदजी प्रसाद सें, "रत्न" कहे कर जोर।।जि०११।।

---

(१६)

श्री महावीर स्तुति

(तर्ज—निटकली वैरण)

सुज्ञानी नर वंदो श्री महावीर ने, जिनराज ।।टेर।।

हांजी प्रभु चम्पानगर समोसरया, जिनराज,
हांजी थाने कोणक वंदन जाय ।
हांजी प्रभु नरनारी भेला थया, जिनराज,

प्रभुजी रा नयन कमल दल पाखड़ा, जिनराज,
प्रभुजी री कनक वरण[4] सम देह ।
हांजी प्रभु शुभ पुद्गल सहु जगत ना, जिनराज,
हांजी कांई खांच लिया सहु तेह ।।सु३।।
प्रभुजी रे चांवर चार चारूं दिसे, जिनराज
हांजी थारे छत्र रया सिर फाव ।
हांजी प्रभुजी इन्द्र नरेन्द्र मुख आगले, जिनराज
हांजी कांई वाड़ी खुली य गुलाब ।।सु०४।।
प्रभुजी रा शिष्य मुक्ताफल सेहरा, जिनराज
हांजी केई गुण रत्नारा निधान ।
हांजी केई पूर्वधर दृष्टि धरा, जिनराज
हांजी कोई पाम्या हैं केवलज्ञान ।।मु५।।
हांजी प्रभु नायक लायक तुम जसा, जिनराज,
हांजी कांई टाल दे वैर विरोध ।
हांजी भव भव तपन मिटायवा, जिनराज
उपनो हैं प्रबल पयोद[5] ।।मु६।।

---

१ मुख २ नेत्र ३ फूलों का रस ४ सोना ५ [illegible]

प्रभुजी ने देख देख हरषे हियो, जिनराज
हांजी थांरी सांभल अमृत वाण ।
प्रभुजी रे गणधर गौतम नित कने, जिनराज
हांजी थारा वचनारे परमाण ॥सु७॥
प्रभुजी थे श्रेणिक ने कर दियो सारखो, जिनराज,
मेघ' ने लियो समझाय ।
प्रभु थाने दुःख दिया, ज्याने तारिया, जिनराज
हांजी थारी महिमा रही महकाय ॥सु८॥
हांजी प्रभु हूँ चाकर चरणां तणो, जिनराज
हांजी तुम सम मिलिया नाथ ।
हर्ष आनंद हुओ घणो जिनराज
हांजी जिम बिछड़ियो मिले निज साथ ॥सु९॥
प्रभुजी रो वर्णन उवाई उपांग में, जिनराज
हांजी थारा गणधर किया गुण ग्राम ।
"रतनचन्द" गुण गाविया, जिनराज
हांजी कांई वडलू ग्राम मझार ॥सु१०॥

भवजीवां हो वन्दो भगवन्त ने ॥टेर॥

दोष अठारा परिहरे, ते जाणो हो एक देव जगदीश ।
पूर्व पुण्य प्रकाश सुं, ज्यांरे हुवे हो अतिशय चोंतीस॥
रोग रहित जिनवर हुवे, मांस लोही हो वले मधुर
आहार निहार दीसे नहीं, सासोस्वास हो वले सुरभि[1]
॥
ये अतिसय गृह वास में, कर्म चूरिया होव ले प्रकटे २
जोजन क्षेत्र मांहा रहे, कोड़ा कोड़ी हो सुर-खग[2]-नरन
॥भ
रोग वैर दुभिक्ष मरी, नहीं होवे, हो वले सातूं ईत ।
अल्प घणा विरखा नहीं, स्वचक्र परचक्र कुरीत ॥भव४
ए नव न हुवे सोकोस में, सह समझे हो आपरी वाण
घनघाती कर्म क्षय किया, अतिशय हो एकादस जाण ॥
चक्र–चामर सिंहासने, तीन छत्र हो ध्वज करे अहलाद
कनक-कमल भामंडले, गढ़ तीने हो सुर-दुंदुभि नाद॥

---

१ सुगन्ध २ पक्षी

सिर अशोक सुहावणो, पूठ लारे हो हुवे वाय सुवाय ।
पंखी करे प्रदक्षिणां, छहुँ ऋतु हो वरते सुखदाय ॥भव७॥
पाखंडी किम्ट होई नमें, फूल पाणी हो वरसे निर्जीव ।
कंटक सहु ऊंधा पड़े, ऐसी दीप्ती हो शुभ पुण्यरी नींव॥भव८॥
नख केश अशुभ वधे नहीं, सुर पासे हो थोड़ा तो एक क्रोड़ ।
ये उगणीस पुण्य प्रकट्यां, सब मिलिया हो चौंतीस ॥भव९॥
गुण पेंतीस वाणी तणां, शुभ लक्षण हो एक सहस्र ने आठ ।
पुद्गल-छवि सुखकारणी, प्रभु संच्या हो बहुपुण्य रा ठाठ ॥
॥भव१०॥

निज-गुण अलख लखे नहीं, भववासी हो समझे व्यवहार ।
नियत न्याय कर निरखतां, जिन न्यारा हो पुद्गल विस्तार ॥
॥भव११॥

कारण सूं कारज हुवे, भवि पावे हो निरखी प्रतिबोध ।
भक्तवत्सल जिनराजजी, सहु मेटे हो प्रभु वैर विरोध॥भव१२
अष्टादश बहोतरे, चोमासो हो कीधो अजमेर ।
"रतनचन्द" करे विनती, म्हारा दीजो हो प्रभु कर्म निवेर ॥
॥भव१३॥

आप विराजो आजे छत्र सुहावणो रे लाल, वाणी अमिय म.
मानो पावस रितु ना बादल बरसना रे लाल, मिलिया सु
नरनार ॥हो
देवांगना मिल गावे धवल मनोहरू रे लाल, नाटक ना
झनकार हो
केसर क्यारी खिल रही, हर्ष सहु धरे रे लाल ॥हो२॥
सिर पर वृक्ष अशोक हो सु० षड्रितुनो सुखदायक
झकोरतोरे
सुर नर आवे देवलोक हो सु० मूल मिथ्यात नो दंभ
हिया नो खोलना रे लाल ॥हो
मो मन अधिक उच्छाह सुखकारी० वाणी सुधा-रस पिऊ
भरी हियो रे ल
मेटूं भव भव दाह, हो सुखकारी० एह मनोरथ फलसी
जद जियो रे लाल ॥हो
धन धन ते नरनार हो सुखकारी० दरसन देखी हर्ष क.
नेतर भरे रे

भव निध अगम अपार हो सुखकारी,
तुमची आण प्रमाणकरी छिनमें तिरे रे लाल॥हो५॥
जग तारण जिनराज हो सुखकारी,
म्हारी विरिया आलस साहेब किम करो रे लाल।
१ खो अविचल लाज हो सुखकारी,
परम कृपाल दयाल भरोसो आपरो रे लाल॥हो६॥
"रतनचन्द री अरदास हो सुखकारी,
चरण समीपे राखो तो सफली चाकरी रे लाल।
दीजो शिवपुर वास हो सुखकारी,
चन्द चकोर ज्यूं चाऊं सेवा आपकी रे लाल॥हो७॥

---

(२२)

श्री पार्श्वनाथजी का स्तवन

पास प्रभु आस पूरो, देवो शिवपुर वास ॥ टेर ॥
त्रास गर्भावास मेटो, हूँ चरणारो दास
उठत बेठत सोवत जागत, बसरह्या हृदय मझार, माने ॥ १ ।
मात तात अरु नाथ तूंही, तूं खाविंद किरतार।
सज्जन वल्लभ मित्र तूंही, तूंही तारणहार प्रभु ॥ २ ॥

शरण आतां जेज कितनी, जो साहिब शिर हाथ ।
लोह कंचन होत छिनमें, फरस्यां पारसनाथव । माने ॥ ६
काष्ठ फाडी नाग काढयो, संभलायो नवकार ।
धरणीन्द्र पद्मावती हुवो, ओ प्रभूनो उपकार । माने ॥ ७
गरीबनवाज विरुद ताहरो, तारीजो माहाराज ।
सेवक निज शरण आयो, आपने अब लाज । माने ॥ ८
कमठमान- भंजन सुखदाता, भय–भंजन भगवंत ।
"रतनचन्द" करजोड विनवे, नीचो नमावी शीप । म
॥ ६

---

(२३)

सांवलिया सु प्रार्थना

सांवलियो साहब सुखदायक, सुणजो अर्ज हमारी ॥ टे
जगसागर कारागर सरिखो, तिणसेती मोय तारी ॥ १
जनमत नयन कमल दल निरखी, हर्षी है महतारी ।
पिता परमसुख पायो प्रभुको, सूरत मोहनगारी ॥ २ ।

जोवन वयमें जोर दिखायो, विस्मय थयो मुरारी ।
सब सज्जन मिल ब्याह मनायो, मोह दशा मनधारी ॥सा ३॥
ब्याह मिस्द मे जीव छुड़ाए, तरी राजुल नारी ।
सहस्र पुरुष से संजम लीनो, आप रहे ब्रह्मचारी ॥सा० ४॥
प्रजन सांब कुंवर को तारी, आठ कृष्ण की नारी ।
पांडव पांच को लिया उबारी, जादव वंश सुधारी ॥सा० ५॥
सहस्र अनेक पुरुष निस्तारी, पहुंता मुक्ति मझारी ।
"रतनचन्द" कहे अवतो आई, आज हमारी वारी ॥ ६ ॥

---

(२४)

मैं चाकर प्रभु तेरो

सांवलियो साहिब है मेरो, मैं चाकर प्रभु तेरो ।
भवसागर में बहुविध भटक्यो, अब तो करो निवेरो
॥ सा० १ ॥
आठ कर्म मोय विकट दबायो, दियो भटक घन घेरो ।
साहिब मेहर नजर कर मोपर, वेगी आप निवेरो ॥ २ ॥
चौरासी की फांसी गालो, टालो भव भव फेरो ।
सेवक ने साहिब हिवे दीजे, मुक्ति महल मे डेरो ॥ ३ ॥

तर्ज :—गुजराती गीत

प्रभुजी थारी चाकरी रे ॥ टेर ॥

श्री अभिनन्दन स्वाम ने रे, सिवरूं शिव रमणीरा
इन्द्र चन्द्र आनन्द सुं रे, हाजिर रहै एकंत ॥ प्रभुजी १
सुर नर असुर विद्याधरो, हांरे सेवै श्री जिनवरजी रा
प्रभु
श्रीमुख-चन्द्र विलोकने रे, हांरे रहै नेण कमल
॥ प्रभुजी २
आनन्दघन जिनराज जी रे, वरसै अमृत नि
प्र
बोधवृक्ष शुद्ध प्रकटे रे, हांरे रहै नेण कमल लोभाय
॥ प्रभुजी ३
भव भव भटकत भेटिया रे, तिरण तारण जिनदेव, प्र
भव भव साहिब दीजिरे, हांजी कांई तुम चरणांरी सेव
॥ प्रभुजी

शिव सुख दायक सायवा रे, हांजी थे तो तीन भवन सिर मोड़ प्रभुजी
चरण समीपे राखजो रे, हांजी प्रभु "रतन" कहे कर जोड़ ॥ प्रभुजी ५ ॥

---

(२६)

चरण शरण में

तर्ज—नैवंतीनी देसी

प्रभुजी दीनदयाल, सेवक शरणे आयो ॥ टेर ॥
भव सागर में बहुविध भटक्यो, अब मैं छेड़ो पायो ॥ प्र० १ ॥
क्षेत्र विदेह विराजे स्वामी, श्रीमन्धर स्वामी,
हूँ चरणे आवी नहीं सकतो शूं छे मुज में खामी ॥प्र० २॥
निज चाकर निभाव करणने, सहु जन दीसे वाला,
सेवक ने सायब नहीं तारे, इम वरते अवहेला ॥ प्र० ३ ॥
शुक्ल पक्षी गंठी भव भेदी, जद तुम दरशन रुच लागी,
रात दिवस सुपनान्तर मांही, तुम सेती लिव लागी ॥प्र०४॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म नी लिवल्या, हिवे सर्वथा में तोड़ी

ते पराक्रम नहीं रूत-पुत्र न, माल माहमा।
नीर असुच पड़े गंगा में, ते गंगोदक वाजे,
हूँ अवगुण दरियो पूरण भरियो, पिण भेट्यो जिनराजे ॥प्र
व्यसन इन्द्री करम ने भेदी, आतम सम्वंत (१८७५)
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसादे, 'रतनचन्द' गुण गावे ॥प्र०

१ कदली पत्र २ जूतो

---

(२७)

राज़ुल विलाप

तर्ज :—भैरवी

रहो रहो रे सांवलिया साहिब, बोलत राजुल राणी।
बिन परमारथ छोड़ चले मोय, प्रीत तुम्हारी जाणी
॥ रहो०
बहुत बरात बनाय के आये, लाये [१]सारंग-पाणी।
तोरण सु' रथ फेर चले जब, जादव जान लजाणी
॥ रहो०
सहु की आशा करी निराशा, ऐसी बात सयाणी।

१ बल भद्र

पशुअन के सिर दोष दियो पीण, काढी रीश-पुराणी
॥ रहो० ३ ॥
रही मनोरथ-माला मनमें, इम उभी पिछताणी ।
तुम छोड़ी पिण में नहीं छोडूं, ए हमची अधिकाणी
॥ रहो० ४ ॥
किये विलाप अनेक विविध पर, मोह दशा मन आणी
धन धन नेम जिनेश्वर साहिब, राख्यो [1]मन्मथ ताणी
नेम संजम सुण लीधो संजम, पामी पद निर्वाणी ।
"रतनचन्द" कह धन सतवंती, अविचल शील मंडाणी
॥ रहो० ६ ॥

१ काम

(२८)
(तर्ज:— निवर हंजो ए देशी)
वीरजी सुणो ॥ टेर ॥

त्रिशला-नंदन साहिबा, सांभल दीन दयाल ।
बिरद विचारी ने कीजिये, सेवक नी संभाल ॥ वी० १ ॥
आप अपना दासनी, सहु कोई पूरे आश ।
मैं शरणो लियो आपरो, करसो केम निराश ॥ वी० २ ॥

कजली वन नहीं वीसरे, जठों रहयो गजराज । वी ।'
इण विध हूँ परवश पड़यो, पिण चित्त चरणां रे मांय । वी
६ ॥

पिण पुद्गल परचो गणो, निज गुण सुं विपरीत । वी
निरमल विन तूं नही मिले, मैं जाणी आपरी रीत ॥
॥ ७ ।

क्युं पराक्रम सेवक तणो, क्यूं साहिब नो साथ । वी
गरीब अनाथ ले निरवहो, थें हो गरीबनवाज ॥ वी ॥
भांत भांत अरजी करी, कर कर मन विश्वास । वो ॥
महरवानगी अधिकी नहीं, पिण जाणजो आपरो दास ।
॥

चरण समीपे राखजो, मैं अरपाया सहु थोक । वी ॥
दुरपल-भूत तो बाहुले, राजी कहै सहु लोक ॥ वी ॥ १
जोधाणा में पेसठे, आप लियो विश्राम ।
"रतनचंद" कहे वीरने, क्रोडां क्रोड सलाम ॥ वी ॥ १

(२६)

समवसरण महिमा

(तर्ज—श्री गोतमस्वामी में गुण घणा)

जिनराज सदा ही वंदिए ॥ टेर ॥

श्री सिद्धार्थनन्दजी प्रभु भगवन्त श्री महावीर
उपसम संजम आदरिया हुवा सूर वीर ने धीरजी ।
ज्यांने दीठा हर्षे हीरजी, प्रभु सायर जेम गंभीरजी
हुवा छः काया रा पीरजी ।

देव तिहां त्रिगडो रचे, प्रभु चार कोस अनुमान,
भूम थकी ऊंचो कह्यो, गाउ अढाई को ज्ञानजी.
घणो ऊंचो ने असमान जी, जिणमें ध्यावे आतम ध्यान जी
पाखंडी मूके मान जी ॥ जि ॥ १ ॥

थिर अशोक-छाया करे, प्रभु मांजरी लुल लुल जाय,
वीर विराज्या तिण तले, झक झोले शीतल वायजी
ज्यांने दीठां आनन्द थायजी, ज्यांरी सोवन वरणी कायजी
प्रभु पाप पटल टल जायजी ॥ जि ॥ २ ॥

स्फटिक-सिंहासन विराजिया, प्रभु छत्र धरावे सार
भामण्डल झलके भलो, रलियावणो रुप अपार जी.

शिवपुर-वास जी ॥ जी ।

देव मिल्या नभ-मारगे, प्रभु देव्यां क्रोडा क्रोड
गगन विमान खड़ा किया, कोई अलगा ने कोई
इम अरज करे कर जोड़ जी, कहै भव सागर थी छ
म्हारी टालो भवतणी खोड जी ॥ जि ॥

भविक-कमल प्रतिबोधवा; प्रभु उदया चल जिम सूर,
अमित-पदार्थ युत गिरा, वाणी गंगाजल जिम पूरजी,
सुणतां दुःख जावे दूरजी, प्रभु कर्म किया चकचूरजी,
इन्द्र चन्द्र मुनि है हजूर जी ॥ जि ॥

ए संसार असार छे, भवि चेतो चेतो नरनार
भवसागर में भटकतां, पाम्यो मानव नो अवतार जी
हिवे आदरो संयम भारजी, ल्यो श्रावक ना व्रत धार
ज्यों पामो भवजल पार जी ॥ जि ॥

राजगृही नगरी मझे, प्रभु जिनवर कियो वखाण
वाणी सुण जिनराजरी, कई उठ्या चतुर सुजाण जी
संयम लीयो हित आणजी, केई पहुँचा विजय-विमान
कई पामिया पद निर्वाण जी ॥ जि ॥ ८

चरण आय सकूं नहीं साहिब, प्रातः प्रातः वन्दना २
॥ श्री ॥ ७

"रतनचन्द" कहे देव निरंजन, भवसागर वेगो तारी ॥
श्री ॥ ८

---

(३१)

सतगुरु वाणी

(तर्ज— वेसर सोना की ए देशी)

वाणी सतगुरु की, सुणो सुणो हो भविक मन लाय ॥
॥ टेर ॥

मीठी जाणो अमृत-धार, मेटे मिथ्यात अंधार – या –
सुणतां समकित घट उद्योत¹, वले प्रकटे आतम ज्योत ॥
॥ १

कपिलपुर नो संजति राय, नित जीव-मारण ने जाय –
मृग देखी ने मार्यो तीर, बींध्यो नाम शरीर ॥ वाणी ॥२

---

१. प्रकाश

दाख-मंडप बैठा मुनिराय, आय पडयो तिण ठाम — वा —
हरिण लेतां देख्या मुनिराय, में तो कीधो बड़ो अकाज ॥
वा ॥ ३ ॥
हाथ जोड पडियो ऋषि पाय, निज-अपराध खमाय — वा -
बोल्या नहीं गर्दभाली साध, तद जाण्यो कोप अगाध ॥
वा ॥ ४ ॥
कोपियो रिख बाले सहु लोग, म्हें तो कीधो कर्म अजोग-वा
डरतो देख बोल्या रिख राय, मोसुं अभय तोने महाराय
॥ वा ॥ ५ ॥
तूं पिण मत हण जीव अनाथ, यो राज न चलसी साथ-वा
मात पिता नारी परिवार, थांरे कोइयन चलसी लार ॥ वा
॥ ६ ॥
रंग-पतंग संसार स्वरूप, यो तो कपट कूड नो कूप — वा ·
इन्द्र-जाल सुपना नो ख्याल, तुमे मत भूलो महिपाल
॥ वा ॥ ७ ॥
निर्मलज्ञान सुण्या ऋषि वेण, तद खुलिया अन्तर नेण-वा
ततक्षण त्याग दियो संसार, शुद्ध लीधो संयमभार ॥ वा
॥ ८ ॥
ज्ञान परख आज्ञा उरधार, हुआ एकल-मल अणगार-वा —

॥ वा ॥ ११
जयपुर में कीधो चोमास, सहु पाम्या हर्ष–उल्लास – वा
"रतनचन्द्र" ए कीधी ढाल, चराणु दीपक माल
॥ वा ॥ १२

---

(३२)

जिनेश महिमा

(तर्ज:—सारंग राग)

जिनराज जी महिमा अति घणी, कांई कहीय न जावे
॥ टेर
सुर नर असुर विद्याधर किन्नर, सेवा सारे तुम तणी ॥
जि ॥ १
काम धेनु चिन्तामणी, सुरतरु में लाधो चिन्तामणी ॥
जि ॥ २
अवर देव सहु काँच बराबर, तूं छे हीरारी कणी ॥
जि ॥ ३
मृत्य, पाताल के मांही, तुम कीरत काने सुणी ॥ जि ॥

ध्यान तुमारो सहु नर ध्यावे, ज्ञानी ध्यानी ने महामुनी
॥ जि० ५ ॥
रात दिवस तुम वस र्‌या मन में दरशन होसी कर्म हणी
॥ जि० ६ ॥
सेवक नी यह अर्ज सुणी ने, टालो मरण जरा अणी
॥ जि० ७ ॥
"रतनचन्द" कहै तारो साहेब, तूं तारक त्रिभुवन धणी
॥ जि० ८ ॥

---

(३३)

गुरु गुण मिहमा

(तर्ज—जय बोलो पार्श्व जिनेश्वर की)

मिलिया गुरु ज्ञान तणा दरिया ॥ टेर ॥
सुण उपदेश रेस गई तन की,
भव भव के पातक झरिया ॥ मि ॥ १
सुमत गुपत चित्त दृढ कर राखे,
पाले शुद्ध निर्मल क्रिरिया ॥ मि ॥ २
सप्तवीस गुण

गुरु वचन अमीरस

मन सतगुरु सीख कहा भूले ॥ टेर ॥

काल अनाद लयो मानव भव,
धर्म विना आगे कहा धूले ॥ मन ।
अचल अखेपद आवे छिन में,
सतगुरु वेण के कुण तूले ॥ मन
पुद्‌गल फंद रचियो इण जग में,
देख देख चित्त कहा फूले ॥ मन ।
"रतनचंद" गुरु वचन अमीरस,
आतमराम सदा झूले ॥ मन ।

(३५)

उपकारी गुरु

गुरु सम कुण जग में उपकारी ॥ टेर ॥

मेट मिथ्यात कियो चित्त निर्मल,
ससिशिरोमण सुखकारी ॥ गुरु ॥ १
आतम ज्ञान अपूर्व पायो,
भर्म मिथ्या मेटी सारी ॥ गुरु ॥ २
इन्द्रिय चोर किया ठग ठावा,
मन महिपत लीधो मारी ॥ ३ ॥
आगम वेद कुरान पुराण में,
गुरु महिमा सुविस्तारी ॥ ४ ॥
गुरुगुण कहतां जिन पद लहीये,
क्रोड क्रोड़ जाऊं वारी ॥ ५ ॥
गुरु गुण लोप लियो कुण शिवपुर,
अपछन्दा जे अहंकारी ॥ ६ ॥

(३६)

गुरू वाणी

(तर्ज–राग सोरठ गिरनारी)

म्हाने रूडो लागे छे जी गुरु उपदेश ॥ टेर ॥

सत्य वचन सुधारस[1] प्रकटे, कूड़ नहीं लवलेश ॥ म ॥१

मूल मिथ्यात-तिमिर[2] दुःख टालण, गुरू उपदेश दि

पुद्गल–रुची विषम–ज्वर मेटन, समकित रस प्रकटेश
॥ म ॥ २

आठ कर्म को घाट विषमता, टाले सकल क्लेश ।

भ्रमत भ्रमत पुद्गल मह पूरे, अब सुख कियो विशेष
॥ म ३

धन-धन ग्राम नगर पुर पाटन, धन सुन्दर उपदेश,

जहां सद्गुरु सिंहासन बैठा, भाषे दया-धर्म रेश ॥ म '

---

१. अमृत २. अन्धकार ३. सूर्य

निरखत नयण भविक-जन हरसत, पामित सुख असेस,
गुरु वायक सुण खायक भावे, पावे मुगत अवेस ॥ म ५ ॥
कामधेनु चिन्तामण सुरतरु, सद्गुरु वचन अजेश
'रतनचंद' कहै गुरु चरणांबुज, मुझ मस्तक प्रवेश ॥ म ६ ॥

---

(३७)

-सांवलिया साहिब-

(तर्ज–माँ मेटो हमारी ममता देशी)

सांवलिया सुरत थांरी, प्रभु मो मन लागे प्यारी ॥ टेर ॥
समुद्र विजय सुत नीको, जादव कुल मंडन टीको ॥सा १॥
थांने राणी सेवा देवी जाया, थांरे इन्द्र महोत्सव आया
॥ सा २ ॥
प्रभु रूप अनूपम भारी, देखत रीझत नर नारी ॥ सा ३ ॥
प्रभु तोरणथी रथ वाल्यो, प्रभु जीव-दया व्रत पाल्यो
॥ सा ४ ॥
प्रभु करुणा रस मन धारी, थे छोडी राजुल नारी
॥ सा ५ ॥
प्रभु तप जप

॥ सा ९

हे प्रभु विरुद तुम्हारो पालो, हिवे तारक म करो टालो
॥ सा १०

म्हारी लिव साहिब सु ं लागी, सहु भ्रान्ति मिथ्यात री
॥ सा ११

गुरु गुमानचन्दजी सुखकारी, ओलख बताई तुम्हारी
॥ सा १

चौपन वैसाख में गायो, "रतनचंद" आनन्द सुख पायो
॥ सा १

---

(३८)

वीर जन्मोत्सव

(तर्ज-'हिरणी चर चरे ललना' ए देशी)

धन्न सिद्धारथ राजवी ललना,
ललाजी हो धन त्रिसला दे
जिनवर जन्मियो ललना ॥ टेर ॥

दसमा स्वर्ग थी चवकरी ललना, ललाजी हो उपना गर्भ
मँझार ॥ जि १ ॥
ईति, भीति दूरे टली ललना, ललाजी हो मिट गई जगतनी
पीर ॥ जि २ ॥
शुभ लगन सुत जनमियो ललना, ललाजी हो नाम दियो
महावीर ॥ सा ३ ॥
छपन कुमारी मिल करी ललना, ललाजी हो गावे गीत
रसाल ॥ जि ४ ॥
घर घर रंग बधावना ललना, ललाजी हो घर घर मंगल
गान ॥ जि ५ ॥
इन्द्र पांच रूपे करी ललना, ललाजी हो मेरु शिखर ले
जाय ॥ जि ॥
आठ सहस्र चौसठ घड़ा ललना, ललाजी हो प्रभुजी ने
दिया न्हवाय ॥ जि ४ ॥
देव घणो महोच्छव करे ललना, ललाजी हो, थई थई शब्द
उच्चार ॥ जि ॥
वाजा वाजे अनिवंणा ललना, ललाजी हो मादलना धोंकार
॥ जि ५ ॥
ठम ठम पग ठमका करे ललना, ललाजी हो घम घम

तीस वर्ष घर में रह्या ललना, ललाजी हो लीधो संजम
॥ जि ७
तप तपिर्या अति आकरा ललना, ललाजी हो ध्यायो
निर्मल ध्यान।
चारकर्म[1] चकचूर ने ललना, ललाजी हो पाम्या केवल
॥ जि ८
जिन मारग दीप्यो घणो ललना, ललाजी हो कियो
उपकार ॥
नर नारी तार्या घणा ललना, ललाजी हो पहुँता
मँझार ॥ जि ९
पू गुमानचंदजी परसाद सु ललना, ललाजी हो 'रतनचं
करे अरदास,
समत् अठारे पचास में ललना, ललाजी हो पीपड़
चौमास ॥ जि १०

१-घातीय कर्म-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अन्तरा

(३९)

श्री वामाजी रा नंद

(तर्ज—झिलारी देशी)

बणारसी नगरी सुन्दर अति सोभे हो, वामादेजी रा नंद
वामादेजी रा नन्द ॥ टेर ॥
परदेशी लोग वटाऊ तणा, मन मोहे हो जिनंद ॥ वा १ ॥
भू-भामण[1] सिर तिलक अश्वसेन राया हो वा० राणी सुख
दायक पुत्र रत्न जिन जायो हो जिनंद ॥ वा ॥
इन्द्र चन्द्र मिल प्रभुजी नो महोछव कीधो हो, वा०
संसार असार तज संजम मारग लीधो हो ॥ जि० ३ ॥
मोर चकोर जलधर द्विजराज ने ध्यावे हो, वा०
पास जिनंद आनन्द सदा मन भावे हो ॥ जि० ४ ॥
जगतारण जोगीसर तुम सुखदाई हो, वा०
कामधेनु चिन्तामणी सूं अधिकाई हो ॥ जि० ५ ॥
भव भव नाम तुम्हारो ही आडो आवे हो, वा०
नाम थकी शिव मोक्ष तणा सुख पावे हो । जि० ६॥
गुणवंत ज्ञानी ध्यानी तणा मन मोहे हो, वां०
हंस, इंदु सुरस्मय इकी सोहे हो ॥ वा ७ ॥
पूज्य गुमानचंद जी पुण्य जोगे पाया हो, वा०

शान्ति करो शान्तिनाथजी
तुम सम जग में कोई नहीं, थे तीन भवन का नाथजी
॥ शां १

विश्वसेन राजा दीपतो अचलादे थांरी माय जी।
सर्वारथ सिद्ध थी चवी करी, थे उपना गर्भ में आयजी
॥ शां० २

शांति नाथ प्रभु जन्मिया, शान्ति हुई सहुलोक जी।
दुःख दोहग दूरे टल्यो, मिट गयो जगनो शोकजी
॥ शां० ३

चोसठ सहस्त्र राणी परणिया, आयो समता-भाव जी।
संसार ना सुख भोगवी, संजम लियो धर चावजी ॥ शां

एक मास छद्मस्थ रया, थे ध्यायो निर्मल ध्यान जी।
चार कर्म चकचूर ने, थे पायो केवल ज्ञानजी ॥ शां० ५

शान्तिनाथ साता करे, आपद् जावे दूर जी।
मन-वांछित सुख सम्पदा, रहे भंडार भरपूरजी ॥ शां० ६

भूत-व्यन्तर राक्षस जिके, डाकण साकण चोर जी।

पृ० ४८ का शेष—गाथा सं० ६ से आगे।

नामथकी आपद टले, मिटे शत्रु को जोर जी ॥ शां. ७ ॥
शान्ति समान संसार में, अवर न बीजो देव जी।
तिरण तारण जिनराज जी, हूँ सेव करू नितमेव जी ॥ शां० ८॥
संवत अठारे इक्कावने, पीपाड़ शहर चोमास जी।
पूज्य गुमानचन्दजी रे प्रसाद थी, 'रत्नचन्द' करे अरदास जी
शां० ॥ ९ ॥

(४१)

श्री मंधर महिमा

(तर्ज—पनारी देशी)

श्री मन्धर जिनदेव, प्रभू म्हारो दरसण देखण हिवड़ो उमगेजी । जि०

सारे थांरी सुरनर सेव-प्र० चोसठ इन्द्र उभा ओलगे जी ॥ जि० १ ॥

सुण सुण अमृत वाण-प्र० निर्मल पाणीजी वाणी आपकी जी ।
प्रकटे समकित रयन प्र० ततखण नासे मनसा पापरी जी ॥ जि० २ ॥

प्रभू गुण गहर गंभीर प्र० दरसण देखी ने हरखे आंखड़ी, जी । जी०

हुलसे हिवड़ो जी हीर प्र० विकसे काया कमलनी पांखड़ी जी ॥ जि० ३ ॥

जग तारण जिनराज प्र० हूँ पिण चाऊं जी चरणा री चाकरी जी ।

सेवक की अरदास

(तर्ज—अनोखा भंवरजी हो साहिब झालो द्यूं घर आव)

साहिब सांभलो हो प्रभूजी, सेवक नी अरदास ॥ टेर ॥
पुंडरिकनी नगरी भली हो, प्रभूजी श्रेयांस राय उदार
माता थारी सत्यकी हो, प्रभूजी रुक्मण नामे नार
॥ सा० १

संसार ना सुख भोगवी हो, प्रभूजी, लीधो संजम भार ।
केवल ज्ञान प्रकाशियो हो, प्रभूजी देव मिल्या तिणवार
॥ सा०

आप बसो विदेह में हो प्रभूजी, हूँ बसूं अति दूर ।
बिच में भंगी झाड़ी घणी हो, प्रभूजी किम कर आवूँ
॥ सा०

सुरनर तुम सेवा करे प्रभूजी, नर नारयां ना ठाठ ।
हूँ आवीसक्तो नहीं हो प्रभूजी, विच में विषमी वाट
|| सा० ४ ||

श्री सीमंधर साहेबा हो प्रभूजी, अर्ज करू कर जोड़ ।
भवसागर भटक्यों घणो हो प्रभूजी, अब बंधन थी छोड़
|| सा० ५ ||

नरक निगोद में हूँ भम्यो जी हो प्रभुजी, कुगुरु तणे संग बैठ
सुख रति पाम्यो नहीं हो प्रभूजी, हिंसा धर्म में पैठ
|| सा० ६ ||

श्रो दुःखमी आरो पांचमो हो प्रभूजी, घणा फैल फितूर ।
मैं धर्म पायो आपरो हो प्रभुजी मिथ्या मत कियो दूर
|| सा० ७ ||

रतन चिन्तामणी नाखने हो प्रभुजी, कांकर कुण ले हाथ ।
अटवी मांहीं कुणे भमे हो प्रभुजी, छोडी सखरो साथ
|| सा० ८ ||

अमृत भोजन छोड़ने हो प्रभुजी, तुसिया कहो कुण खाय ।
देवलोक न म[illegible] नरक [illegible]

अबतो शरणो आपरो हो, प्रभुजी दीजो पार उतार
॥ सा० ११

तारक धर्मज आपरो हो प्रभुजी, पर भव में आधार।
जे हिरदा में राखसी हो प्रभुजी, जिणरो खेवो पार
॥ सा० १२

संवत अठारे तेपने हो प्रभुजी, नागोर शहर चौमास।
पूज्य गुमानचंद जी रा प्रसादथी हो प्रभुजी, "रतन"
अरदास ॥ सा० १३

---

(४३)

श्री धर्मनाथ प्रार्थना

(तर्ज—शंकर बसे रे कैलाश में)

म्हारो मन लाग्यो धर्म जिनंद सुं रे ॥ टेर ॥
धर्मतीर्थ वरतावे रे, भविक-जीव प्रतिबोधने रे।

मुगत-महल में लावे रे ।। म्हा० १ ।।
विजय-विमान थी चव करी, रतनपुरी शुभ ठाम रे ।
भानुराय सुव्रतामातजी, जन्म लियो अभिराम रे
।। म्हा० २ ।।

राणी परण्या अति सुलक्षणी रे आण्यो मन वैराग ।
तन धन जोवन जाण्यो कारमो, ततक्षण दीनो छःत्यागरे
।। म्हा० ३ ।।

शुभ परिणामें पदवी प्रकटी रे, हुआ तीर्थंकरराय रे ।
सुर असुर मिल्या सहु देवता, लुल लुल लागे हो पाय रे
।। म्हा० ४ ।।

तेज प्रताप तिहुँ लोकज मेरे, रयो तीन छत्र में फाव रे ।
परखदा सोभे जिन मुख आगले रे, वाड़ी खुली है गुलाव रे
।। म्हा० ५ ।।

सिर अशोक छाया करे रे, शोक न रहे लिगार रे ।

|| म्हा० ८

वाणी तो मीठी अमृत सारखीरे, जाणे दूध पिवात रे।
सुणता तो तृपत थावे जीवड़ोरे, अवर सुहावे नहीं वांत
|| म्हा ९

काच नो खंड अने किहां मणिरे, किहां तारा किहां
विपने अमृत रस नों आंतरोरे, तिम अन्य देव जिनंद
|| म्हा १०

घणा जीवने जीनवर तारनेरे, मुक्त गया महाराज रे।
अब हूँ सरणों साहिब आपरेरे, सारो वंछित काजरे
|| म्हा ११

संवत अठारे वर्ष चोपनेरे, मोटो शहर नागोर रे।
पूज्य गुमानचंद जी प्रसाद थी रे "रतन" कहे कर
|| म्हा १

---

१ नेत्र २ कालिमा

(४४)

श्री युग मंधर स्तवन

(तर्ज–कांइय तारीफ करु हो)

श्री युगमंदिर साहिब केरो, चित्त नित दरशण चावे हो
॥ टेर ॥

निर्धन रे एक धननी इच्छा, भाग विना किम पावे हो
॥ श्री० १ ॥

नन्दन-वन सुख छोड़ स्वर्ग थी, तुम दरशण आवे हो,
अमृत वाणी कर इन्द्राणी, तुम गुण मंगल गावे हो
॥ श्री २ ॥

छत्र धरे सिर चामर वींजे, सुरनर सहु हरसावे हो ।
वर्षा काल प्रवल घन प्रगटयो, भव भव तपत मिटावे हो
॥ श्री ३ ॥

भविजन मोर निहोर करी, धुन सन्मुख आन बधावे हो
वाणी रो तरंग जग प्रकटी, सूत्र सिद्धान्त सुणावे हो
॥ श्री ॥ ४ ॥

निरखण नयन मनोरथ म्हारे, पिण पूरण किम थावे हो,
सज्जन बल्लभ सुर मित्र न म्हारे, तुम सुं आन मिलावे हो
॥ ॰ ५ ॥

दर्श पिपासा

तर्ज सुन्दर सोवणी एदेशी

मनडो उमायो दरसण देखवा, चंचल होय रयो चित्त,
हृदय सरोवर हो उलटे रे नीसरे, आवत जावत नित
|| म || १

आपने म्हारे हो छेनी अति घणी, पिण वस रह्या मुझ
नाम तुमारो हो राखूं तायत नी परे, तरूण पुरुप जिम
|| म ||

चंद चकोरा हो मेघ ध्यावे सखी चातक जलधर जेम
प्यासो पाणी हो हंस सरोवरां, जिम तुम देखण प्रेम
|| म०

राग ने द्वेप हो दोय जाड़ा घणा, प्रबल चारों कषाय।
पंच प्रमाद[१] हो रोग अगाध छे किण विध मेलो थ
|| म०

---

१ मदिरा (मद्य), विषय, कषाय, निद्रा और विकथा

पुद्गल सेती हो रूच नहीं उतरे, जिन गुण थोथा रंग ।
निर्मल संजम हो दुक्कर आराधवा, अष्टवैरी मुझ संग
॥ म० ५ ॥

संशय म्हारा हो सारा ही टाल सूं, गाल सूं मोह मद छाक
नयणे निरखी हो चरणज भेट सूं, मो मन यह अभिलाख ।
॥ म० ६ ॥

मन हिलोला हो जल किल्लोलसा मांडे जी खेचा तान
तरुण पुरुष रे हो सिर जिम केवडो, ज्यूं थारा वचन प्रमाण
॥ म ७ ॥

महर निजर कर मुझने निहाल जो, टालजो मत महाराज
सेवक चिन्ता हो साहिब ने छे, राखजो अविचल लाज
॥ म० ८ ॥

पीपाड माही हो वर्षज साठ में, सुखे कियो चोमास
जिनवर ध्यावे हो "रतनचन्द" यों कहे तिणने छे शाबास
॥ म० ९ ॥

सहु सुख दायक स्वामी जगत ना अन्तर जामी
प्रभू म्हारा कृपा कर महाराज के शरणे लिजिए जी राज
॥ द० १ ।

क्षेत्र विदेह विराजियाजी श्रीमंधर जिन देव
गुण वाणी अतिशय भली, थांरी सारे सुरनर सेवके
॥ द० २ ।

पारस फरस्या थी हुवे जी लोहो कंचन रूप
तुम दरसण थी साहवा, रंक हुवे पद भप के ॥ द० ३ ।
सिहज मिंडो हो रयो जी, निज पद ... ...िहल
मेद पाया भावट मिटे, कटे कर्म को ... ॥ द० ४ ॥
मृग भुरे मद कारणे जी, आपो लखे न ...प
सायर में तिस्यो रहे जी, पोने जिणरे पाप के ॥ द० ५ ।
निज-गुण संपत ना लखे जी, रहे रांक नी रीत
पढ़े फर्जीनी जग में, पर सु करता प्रीत के ॥ द० ६ ॥

आगम अरथ पावे नहीं, वाक जाल ने भूल
रहे भगुल्या पात ज्यों, सहे भर्म की शूल के ॥ द० ७ ॥
नरक निगोद नी वेदना, भव-भ्रमण में कीध
वसु वरगणा हल्की पड़ी, तरे अवके ओलख लिध के
॥ द० ८ ॥
तुम दरशण बिन सायवाजी, लही न आत्म सोध
भ्रम जाल में भटको कांई, जिम रोही को रोज के ॥द० ९॥
सहु अर्जी नी एक छः जी, सांभलजो महाराज
जिम तिन कर निरभावसी, राखी निज पद लाज के
॥ द० १० ॥
अष्टादस छियांसियेजी, महामन्दिर चोमास
"रतनचन्द" साहिब विना, मिटे न गर्भावास के ॥द० ११॥

---

(४७)

श्री नेमीश्वर जिनराज

,

सुख पूरण पुनमचन्द ॥ ने० २ ॥

तोरण थी रथ चालियो, दया पाली रथ छोड़ने,

थे लीधो संजम भार

सहस्त्र पुरुष संगाते हो प्रभु दीक्षा लिधी दिपती,

लारे निकली राजुल नार ॥ ने० ३ ॥

चोपन दिन में नेमीश्वर हो, साहब छद्मस्त पणे रया,

थे ध्यायो निर्मल ध्यान,

चार कर्म चक-चूरी हो, निवारी आश्र [illegible],

प्रभु पाम्या [illegible] ॥ ने० ४ ।

एक हजार वर्ष रो हो प्रभु, आयु परजा पालने,

थे चढ़िया गढ गिरनार

पांच से छत्तीस हो मुनि दीसे मुत्र पाठ में,

थे पहुँचा मुक्त मझार ॥ ने० ५

१. क्रांन्ति

अन्तरजामी स्वामी हो, शिवगामी सांभल सायवा,
म्हारो जीव तुमारे पास,
दया करी शिव दीजे हो, प्रभू लिजे हाथ संभायने,
सफल करो मुजआश ॥ ने० ६ ॥
मोहन गारो प्यारो हो प्रभू ज्ञान तुमारो पामीयो,
म्हारो चित्त चकवो करे केल
जोगीश्वर अलवेश्वर हो, जिनेश्वर साहिब सांभलो,
मोने शिव रमणी रंग मेल ॥ ने० ७ ॥
प्रीतडली तुम ऐसी हो, छेती ऐती किम सायवा,
पिण तुम छ मन नहीं कोय,
म्हांरे तो तुम सरिसो हो, जग में कोई नर दिसे नहीं,
स्वामी सेवक सामो जोय ॥ ने० ८ ॥
आस करी हूँ आयो, सुख पायो वाणी सांभली,
म्हारो मन हुवो प्रसन्न,
अविनाशी अविकारी हो, जगतारी महिमा थांयरी,
सहु कोई करे धन धन ॥ ने० ६ ॥
तुम नाम थकी सुख लहिया हो, सही पामे शिवपुर संपदा,

पूज्य गुमानचंदजी प्रसादे हो जौड़ करी जुगतसुं,
"रतनचंद" तुमारो दास ॥ ने० ११ ॥

---

(४८)

नेम नगीनो रे

(तर्ज–कथनी मांडयोरे, साधुजी करे वखाण भ्रमचो छाडयो रे)

नेम नगीनो रे तोरण थी रथ फेर संयम लीनों रे
॥ ने० टे० ॥

समुद्र विजय जी को नन्दन नीको, सांवल वरण शरीरो रे,
छप्पन क्रोड़ में शोभरयो जिम, सोवन मुद्रा मे हीरो रे
॥ ने० १ ॥

सिर पचरंगी पाग विराजे आभूषण अंग सोहेरे ।
हरी हलधर सा जानी बनिया, इन्द्र तमासो जोवेरे
॥ ने० २ ॥

॥ नें० ६ ॥

समत अठारे वर्ष तेपने, नागोर शहर चोमासो रे,
पूज्य गुमानचन्द जी प्रसादे "रतन" करे अरदासो रे
॥ नें० १० ॥

---

(४६)

दर्श पिपासा

(तर्ज–तुम [illegible])

सुख कारी हो जिनजी महर करी ने दरशन दीजिए ॥ टेर॥
मनड़ो उमायो हो दरशण देखवा, जैसे चन्द चकोर हो, गु
तुम गुण डोरी मुझ मन वस कियो, जिम चकरी वश डोर हो
॥ गु० १ ॥
दूर दिसावर थारो अति घणो बिच में झंगी झाड़ हो, गु०

मन सुं तो अन्तर मूल राखूं नहीं, पिण मोटो मोह कर्म
पहाड़ हो ॥ सु० २ ॥
श्री मंधर गुणनिधि जल भरया, मुनिवर हंस अनेक हो,सु०
मुक्ताफल निर्मल गुण ग्रह, कर कर बुध विवेक हो
॥ सु० ३ ॥
रींझ अमोलक सायब आपरी, कर देवो आप सरीखो हो, सु०
म्हारी तो इच्छा साहिब एहवी, नित रहूँ आप नजीक हो
॥ सु० ४ ॥
वाणी सुधारस जोजनगामिनी, बरसे अमृत वेण हो सु०
रूप अमोलक निरखी आपरो, सफल करे निजनेण हो
॥ सु० ५ ॥
काल अनन्त दुःख में भोगव्या, तुम गुण सम जिनराज हो सु०
पूर्व पुण्य थी आवी मिली, भव जल तारण जहाज हो
॥ सु० ६ ॥
काल विषम, सर्वज्ञ को नहीं, इण ही भरत मंझार हो, सु०
पिण दुःख मेटन तुमने मेटवी, जिनवाणी आधार हो
॥ सु० ७ ॥

(५०)

वर्धमान स्तुति

श्री सिद्धार्थनंद जिनेसर, जगपति हो लाल ॥
लीधो संजमभार, तजी जिण रिद्ध छती हो लाल ॥ १ ॥
उपन्यो केवल ज्ञान, त्रिगडो देवता कियो हो लाल ।
भेटे जिनवर पाय, हरखे सुरनर हियो हो लाल ॥ २ ॥
दे जिनवर उपदेश, धगउ गाजीयो हो लाल ।
मोह मिथ्यातरो तपन के, सगलो भाजीयो हो लाल ॥३॥
उमटी अति असराल, वाणी जलधर[1] गमी हो लाल ।
मीटी दुधनी तान, भविक जन मन गमी हो लाल ॥ ४ ॥
वरसे अमृत रस वेन, सुणी मन्न हरखीया हो लाल,

१. मेघ

ठर रया दोनूं ही नेण, जिनेसर निरखिया हो लाल ॥५॥
भूख तिरखा जावे भाग, हियो हर्ष घणो हो लाल ।
सुख वेदे वनमांहि के, नंदन वन तणो रे लाल ॥ ६ ॥
सुणसुण जिनवर वेण, आशा मन आसता हो लाल ।
ले ले संजमभार, पाम्या सुख सास्ता हो लाल ॥ ७ ॥
मोर ध्यावे एक मेघ, चकोर ज चंद ने हो लाल ।
रात दिवस मन मांय, मैं ध्याचुं जिनंद ने हो लाल ॥८॥
तारक सुण जिनराज के, शरणे आवियो हो राज ।
मेटीयो दुःख जंजाल, परमसुख पावीयो हो राज ॥ ९ ॥
डेह ग्राम मझार के, ढाल किधी भली रे लाल ।
पूज्य गुमानचन्दजी प्रसाद, सहु पुन्यरली हो लाल ॥१०॥
"रतनचन्द" अरदास, साहिब अवधारजो हो लाल
भवसागर थी वेग हिवे, मोय तारजो हो लाल ॥ ११ ॥

स्तुति विभाग समाप्त

औपदेशिक विभाग

(१)

सुमति की सीख

(तर्ज—राग काफी होली री)

अरजी सुणो एक हमारी, विनवै सुमता नारी ॥ अ० टेर ॥
सुमत सखी करजोड़ कहत है, हूँ छूं दासी तुमारी
आप विरह इधको दुःख पाऊं, मत राखो मुझ न्यारी
॥ अ० १ ॥
आज्ञा लोप चलूं नहीं उवट, हूँ नित आज्ञाकारी,
अपछंदी अविनीत कुपातर, कामण 'कुमत' लिगारी
॥ अ० २ ॥
मोह महामद पाय अभागण, ठगिया सहु संसारी,
ऊंडी देत नरक की नींवां, कर कर घोर अंधारी ॥अ० ३॥
मोसु केल मेल सुख करतां, जग कहसी ब्रह्मचारी,
"रतन" सीख सुमती की धरतां, शिव रमणी छें त्यारी
॥ अ० ४ ॥

परनारी छे काली नागण, के विष-वेल समाणी ।
तेज पराक्रम पीलण काजेए, एघर मंडी घाणी,
के गुण-वन वालण छाणी ॥ म० २
रावण राय त्रिखंड को नायक, सीता हरी घर आणी,
राम चल्यो दल बादल लेकर, मारयो सारंग-पाणी,[२]
ये जग में प्रकट कहानी ॥ म० २
पद्मोतर निज-लाज गमाई, कीचक मीच लहाणी,
मणिरथ मोह्यो मेणरया वश, अपजस लियो अनाणी,
कथा आगम में आणी ॥ म० ३
गो-ब्राह्मण ने बाल हत्या रिख, नार हत्या पिण जाणी,
निरखी पार अधिक कह दाख्यो, भाख्यो केवल नाणी,
अनंत दुखांरी ख्यानी ॥ म० '

१—घाई, २—लक्ष्मणजी

"रतन" जतन कर मन थिर राखो, छोड़ो कुमत पुराणी.
मुगत महल की सहल अचल सुख, मुगत रमण सी राणी,
या वीर जिणंद वखाणी ॥ म० ५ ॥
साल छियासी महामन्दिर, में शील कथा सु वखाणी,
शील बिना सहु जन्म अकारथ, क्या राजा क्या राणी,
शील जस उत्तम प्राणी ॥ म० ६ ॥

---

(३)

परस्त्रीगमन निषेध

(तर्ज—राग—खट)

चंचल छैल छबीला भँवरा, परघर गमन न कीजे रे
॥ चं० टेर ॥
जिण पाणी थी, माणक निपजे, सो पर-घर किम दीजे रे,
लोक हंसे अरू सिर बदनामी आव' घटे तन छीजे रे
॥ चं० १ ॥
संकट कोटि सहे जग जेता, आगमवेण सुणी जे रे।
जे विष हलाहल, सो रस कबहु न पीजे रे

॥ म० ८९

परनारी छे काली नागण, के विष-वेल समाणी ।
तेज पराक्रम पालण काजेए, एवर मंडी घाणी,
के गुण-वन बालण छाणी ॥ म० २

रावण राय त्रिखंड को नायक, सीता हरी घर आणी,
राम चढ्यो दल बादल लेकर, मारयो सारंग-पाणी,[२]
ये जग में प्रकट कहानी ॥ म० २

पद्मोत्तर निज-राज गमाई, कीचक मीच लहाणी,
मणिरथ मोह्यो मैनरया वश, अरजम लियो अनाणी,
कथा आगम में आणी ॥ म० ३

गौ-ब्राह्मण ने बाल हत्या रिष, नार हत्या विण जाणी,
तिणथी पाप अधिक कह दाख्यो, भाख्यो केवल नाणी,
अनंत दुखांरी खाणी ॥ म० ४

१—खाई, २—लक्ष्मणजी

कबहुक नरक निगोद बसावत, कबहुक सुर अवतारी,
कबहुक रूप कुरूप को दरसन, कबहुक सूरत प्यारी
॥ प्र० ३ ॥

बड़े बड़े वृक्ष ने छोटे छोटे पतवा[1], बेलड़ियांरी छवि न्यारी,
पतिव्रता तरसे सुत कारण, फुहड़ जण जण हारी
॥ प्र० ४ ॥

मूर्ख राजा राज करत है, पंडित भए भिखारी,
कुरंग[2] नेण[3] सुरंग बने अति, चूंधी पद्मण नारी
॥ प्र० ५ ॥

"रतनचन्द कर्मन की गत को, लख न सके नरनारी,
आपो खोज करे आतम वश, तो शिवपुर छे त्यारी
॥ प्र० ६ ॥

१–पत्ता, २–हरिण, ३–नेत्र

मुगत महल की सहल अचल सुख, अविचल राज करीजे रे
॥ चं० ४ ॥

---

(४)

कर्म फल

(तर्ज—राग परजका लगड़ी)

कर्म तणी गत न्यारी, प्रभुजी, कर्म तणी गत न्यारी
॥ प्र० टेर ॥

अलख निरंजन सिद्ध स्वरूपी, पिण होय रयो संसारी
॥ प्र० १ ॥

कबहुक राज करे मही-मण्डल, कबहुक रंक भिखारी,
कबहुक हाथी मयमन्त डोला, कबहुक खर[1] असवारी
॥ प्र० २ ॥

१—गधा

कबहुक नरक निगोद बसावत, कबहुक सुर अवतारी,
कबहुक रूप कुरूप को दरसन, कबहुक सूरत प्यारी
॥ प्र० ३ ॥

बड़े बड़े वृक्ष ने छोटे छोटे पतत्रा[1], बेलड़ियांरी छवि न्यारी,
पतिव्रता तरसे सुत कारण, फुहड़ जण जण हारी
॥ प्र० ४ ॥

मूर्ख राजा राज करत है, पंडित भए भिखारी,
कुरंग[2] नेण[3] सुरंग बने अति, चूंधी पद्मण नारी
॥ प्र० ५ ॥

"रतनचन्द कर्मन की गत को, लख न सके नरनारी,
आपो खोज करे आतम वश, तो शिवपुर छे त्यारी
॥ प्र० ६ ॥

१–पत्ता, २–हरिण, ३–नेत्र

थम

कर्म कठिन कर नरक पहुँचो, बहुत कष्ट तन पायो
॥ जीव० १ ॥
नरक मांहि जम दोला फिरने, मालासु अधर उठायो।
पकड़ टांग शिला पर पटकी, चिहुँ दिस माहिं भमायो
॥ जीव० २ ॥
सर्प, स्वान,[1] सिंघ रूप करीने, पकड़ पकड़ तोने खायो।
ऊंधे माथे कुम्भी[2] मांहि, अग्नि मांय होमायो रे ॥जी० ३॥
लोही-राध भरी वैतरणी[3], तिण मांहि तोने डुबायो।
मिनख जनमने पायोरे मूर्ख, हाथ कलपन आयो
॥ जीव० ४ ॥
धर्म-ध्यान गुरु ज्ञान न मान्यो, आतम ज्ञान गमायो।
तारण-धर्म जिनेश्वर केरो, हाथ कलूना आयो ॥ जी० ५ ॥
धन धन धर्म करे जग माहिं, मिनख जनम फल पायो।
कहत "रतन" धन ज्ञान सिरोमणि, जिन चरणे चित
लायोरे ॥ जी० ६ ॥

१–कुत्ता, २–घानी, ३–नदी

(६)

समझ का फेर

(तर्ज–)

बड़ो समझ को आंटो[1] जगत में, बड़ो समझ को आंटो
|| टेर ||

सुण सुण धर्म, शर्म नहीं उपजत, विषम कर्म को कांटो
|| ज० १ ||

संवर त्याग, उपावत आश्रव, कष्ट करे उफराटो ।
मन वच काय कमावत सावज्ज[2], पड़ रही भूल निराटो
|| ज० २ ||

जग दुःख टाल हिये सुख माने, रूक्यो ज्ञान गुण वाटो ।
आपो भूल पड़यो इन्द्रियवश, मिटे न मोह को फाटो[3]
|| ज० ३ ||

श्री जिन-वचन दिवाकर[4] प्रकटया, उठ्यो भर्म को टाटो ।
"रतनचंद" आनन्द भयो अब, लख्यो साररस लाटो
|| ज० ४ ||

लच्छन स्याल, सांग धर सिंह को, खेत लोकां[1] को खायो
॥ मे० १ ॥

कर कर कपट निपट चतुराई, आसण दृढ[2] जमायो,
अंतर भोग, योग की बतियां, बग ध्यानी छल छायो॥मे०२॥
कर नर नार निपट निज रागी, दया धर्म मुख गायो।
सावज्ज-धर्म सपाप[3] परूपी, जग सघलो बहकायो ॥मे०३॥
वस्त्र-पात्र-आहार-थानक में, सवलो दोष लगायो।
संत दशा विन संत कहायो, ओ कांई कर्म कमायो ॥मे०४॥
हाथ समरणी, हिये कतरणी, लटपट होट हिलायो,
जप तप संयम आतम गुण विन, गाडर सीस मुंडायो॥मे०५
आगम वेण अनुपम सुणने, दया-धर्म दिल भायो,
"रतनचंद" आनन्द भयो अब, आतम राम रमायो ॥मे०६

(८)

लगन की पीड़ा

(तर्ज–राग काफी)

कठिन लगन की पीर[1] रे, कोई लागी सो जानी ॥ टेर ॥
बाहिर घाव कबहु नहीं दीखे, दाभत हिवड़ो[2] हीर रे ॥१॥
संकट पड्यां निकट कुण आवे, सुख में सहु को सीर,[3]
नेम कृपाल दयाल के उपर, सद के उवारुं शरीर ॥ २ ॥
परभव प्रीत करी पीतल सी, कंचन रेख कथीर,
अबला केनत जी अलवेसर, क्या हम में तकसीर ॥ ३ ॥
राजा राम विलाप किए अति, विकल भाव अधीर,
त्याग सुणी वैरागण हुयगी, ओढ "रतन" शुद्ध चीर ॥ ४ ॥

---

(९)

निन्दक उपकार

(तर्ज–)

निंदा मोरी कोई करो रे, दोष विना सोचन कोय ॥ टेर ॥
निर्मल संजम सुद्ध परणामें, कासुं कहसी लोय ॥ नि० १॥
... मोय,

विषयासंग का परिणाम

(तर्ज-)

मत कोई करियो प्रीत, दुःख के फंद पड़ेला ॥ टेर ॥
प्रीत तणे वश प्राण दिया तज, हिरण सुण सुण गीत
॥ म० १ ॥
दीप पतंग पड़े नेणा वश, मधुकर' मरे सुगीत,
रस रसना वश मीन' मरत है, कुंजर' होय फजीत
॥ म० २ ॥
दुरजन पांच जोरावर जोधा, करदी करे कुरीत,
"नन्द" नजर कर जो वश नम्यो, मोह कर्म ज्यो जीत
॥ म० ३ ॥

(११)
भ्रमना छोड़ो

(तर्ज–मुखड़ा क्या देखे दर्पण में)

तूं क्यों ढूंढे वन वन में, तेरा नाथ वसे नैंनन में ॥ टेर ॥
कई यक जात प्रयाग वणारसी, कइयक वृन्द्रावन में
प्राण वल्लभ वसे घट अंदर, खोज देख तेरा मन में
॥ तूं० १ ॥
तज घर वास वसे वन भीतर, छार[1] लगावे तन में,
धर बहु भेष रचे बहु माया, मुगत नहीं छे इन में
॥ तूं० २ ॥
कर बहु सिद्धि, रिद्धि, निधि आपे, वगसे राज वचन में,
ये सहु छोड़ जोड़ मन जिनसुं, मुगति देय इक छिन[2] में
॥ तूं० ३ ॥
मूल मिथ्यात मेट मन को भ्रम, प्रकटे ज्योत "रतन" में,
सद गुरु ज्ञान अजव दरसायो, ज्यों मुखड़ा दरपण[3] में
॥ तूं० ४ ॥

रूप, स्वरूप, अनूप, अमूरत, माहा २५ ...

नेम जिणंदा मोने, विन अपरावे छोडी जी
|| टेर ,| नें० १ ||

वणी वरात विखेर ने चाल्या, ये बालक ना छंदाजी
|| नें० २ ||

पूर ओलंभो कहन सकी जी, समुद्रविजयजी ना नंदाजी
|| नें० ३ ||

पूर संताप भरि प्रमदा हूं, कही न सके दुःख इन्दाजी
|| नें० ४ ||

पशु नो पाप देखी परमेश्वर, कुड रच्यो ये फंदाजी
|| नें० ५ ||

राजुल एम विचार किए अति, मोह कर्म मत मंदाजी
|| नें० ६ ||

"रतनचंद" धन्य नेम जिनेश्वर, छोड़ दिया सब फंदाजी
|| नें० ७ ||

१३

प्रतिज्ञा पालन

तर्ज—

घर त्याग दिया जब क्या डरना ॥ टेर ॥

कर केसरिया रण उतरिया, पूठ दिखाय के क्या फिरणा ॥ घर० १ ॥

सन्मुख आय अड़े रण जोधा, कायर होकर क्यों मरणा।
कायर हुआ पिण गरज न सरसी, लाजसी सतगुरु का शरणा ॥ घर० २ ॥

वचन कही पलटे पल पल में, ते नर पशु पद में गिणना।
सत पुरुषा को वचन न पलटे, सुख दुःख ले निज अनुसरणा ॥ घर० ३ ॥

चहुँ गति मांही भटक दुःख पायो, अब झाल्या सतगुरु चरणा।
'रतन' जतन कर सत सुध राखो, जग सागर सुख सु तिरणा ॥ घर० ४ ॥

जग में चावी चन्दनवाला, सतियां में इधकाणी
पायक हाथ पड़ी परवश जव, चोहटे हाट विकाणी
|| म्हा० १

पतिव्रता सीता सतवन्ती, जग सघला में जाणी.
अग्निकुंड नाखी रघुपतजी, ततक्षण हो गयो पाणी
|| म्हा० २

त्याग वनिता पर वश भमियो, वेची सुतारा राणी,
हरिश्चंद्र राजा महा सतवंतो, नीच घर आण्यो पाणी
|| म्हा० ३ |

मुंज भूप धारा विच कहीजे, गोली प्रीत लगाणी,
टीकरा हाथ ले फिरियो घर घर में, पुनी गोत गवाणी
|| म्हा० ४ |

वरस दिवस अन्न पाणी न मिलियो, आदि जिनेश्वर नाणी

बारे बरस वीर दुःख पायो. जग में प्रकट कहानी
॥ म्हा० ५ ॥

नगर द्वारिका करी सोवन मय, इन्द्र तणो अगवाणी.
कृष्ण देखतां सुर दीपायन, बाल करी धूलधाणी
॥ म्हा० ६॥

'रतनचन्द' कर्मन की गतिका, अनंता अंनत कहाणी.
आपो खोज करे आतम वश, तो ले पद निरवाणी
॥ म्हा० ७ ॥

१५

सांची सीख

तर्ज—

थारे जीवा भूल घणी रे ॥ टेर ॥

आल पंपाल मांही रहे रातो, तज जिनराज धणी रे
॥ थारे२ १

कुमत कुपातर महा दुःख दायक, ते कीनी निज घरणी रे

राग द्वेष छोड़े तन मन सूं, तो हाजिर शिवरमणी रे

॥ था ४ ॥

विषय तणां सुख काचरे कारण, हारे "रतन" मणीरे
सुमत सीख माने नहीं मूरख, कुमत वधू परणी रे

॥ था ५ ॥

१६

रसना इन्द्रिय निग्रह

तर्ज—

रसना बिगर बिचार्यां मत बोल ॥ टेर ॥
बिगर बिचार्‌यां वचन कह्यां सुं, घटसी थारो तोल

॥ रसना० १ ॥

आल पंपाल वदे अविचार्यो वाजे अपजस ढोल
॥ रसना० २ ॥

बीजा में एक दोष दोय तोमें, स्वाय बिगारे अमोल
जो कोई धर्म वने मुख बोल्यां, झट दे तालो खोल
॥ र० ३ ॥

जो कोई आण उपाद उठावे, वचन वदे डमडोल
तो तूं जाण उपाद करे नर, देत कर्म झकझोल
॥ रस० ४ ॥

सतगुरु वचन कुठार करीने, कर्म काठ को छोल
"रतनचन्द" कहे इतनो में तोय, कर लीधो छे कोल
॥ रसना० ५ ॥

१७

विषय विडंवना

(तर्ज—पूर्ववत्)

विषया वश जन्म गयो रे ४ ॥टेर॥

सूखो करक* स्वान सुख मानत, अमृत आहार लह्यो रे,

"रतन" जतन कर शील आराधो, नीठ नीठ जग लहयो रे
अब के चूक पड़ी जीव तो में, तो विरथा जन्म भयो रे॥वि४

१८

सुमति विचार

(तर्ज—राग खंभाच)

विनवे सुमता नारी घर आवोनी प्यारा ॥ टेर ॥
कुमत कुपातर कुटिल सखी संग छोड़ो नी सेण हमारा
॥ वि० १ ॥
राग द्वेष दोय कुंवर कुपातर, अधिया करे विकारा ॥वि० २॥
नरक निगोद री छेल लुटावे, कर कर लोग संचारा
॥ वि० ३ ॥
सुमत सखी सुविनीत सुकोमल, निज गुण अमृतधारा

समकित सेज संतोष सुलाई, ज्ञान दीपक उजियारा
॥ त्रि० ५ ॥
कीजे सहल महल शिवपुर की, सहु जग दास तुम्हारा
॥ त्रि० ६ ॥
"रतनचंद" कहें सीख सुमतकी, मानो नी अकन कुंवारा
॥ त्रि० ७ ॥

१६

कर्म गतिका

(तर्ज—)

कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावे ॥ टेर ॥
पुंडरीक तीरयो तीन दिवस में, कुंडरिक नरक सिधावे
॥ क० १ ॥
गुरु वेमुख थयो गोशालो, अंते समकित आवे
॥ क० २ ॥
संजति राय आहेडा करता, जनम (लामण) मरण मिटावे
॥ क० ३ ॥
चार हत्या कर चोर प्रहारी, देव विमाने जावे ॥ क० ४ ॥
"रतनचन्द" कर्मन की गतका, अनंता अनंत कहावे

मानव को भव पाय ने मत जाय रे निराशा
आतम ज्ञान अनूपम सागर, सतगुरु देवे दिलासा

॥ मा० १ ॥

तन धन योवन पल में पलटे, ज्यों पाणी बीच पतासा

॥ मा० २ ॥

मात, पिता, तिरिया, सुत, बन्धव, ज्यूं पक्षी तरु वासा

॥ मा० ३ ॥

हाथी हलन घोड़ा चकडोला, तजिया हैं महल निवासा

॥ मा० ४ ॥

इमा समुद्र में देह ने प्याला, रहना है यो हासा

॥ मा० ५ ॥

सुख सागर की लहर तरंगें, जिम करे अनघर वासा

॥ मा० ६ ॥

"ज्ञानचन्द" के कर्म आगयो, ज्यूं नकल फले मन आ…

॥ मा० ७ ॥

२१

समता रस

(तर्ज—)

समता रस का प्याला, पिवे सोई जाणे ॥ टेर ॥
छाक चढी कबहू नहीं उतरे, तीन भवन सुख माने
॥ पी० ॥ १ ॥
एह सम अवर नहीं रस जग में, इम कहे वेद पुराणे
॥ पी० ॥ २ ॥
सकल क्लेश टले एक छिनमें, जो समता घट आणे
॥ पी० ॥ ३ ॥
चोर चेलापति समता रस कर, पायो अमर विमाणे
॥ पी० ॥ ४ ॥
"रतनचन्द" समता रस प्रकट्यां, लहि केवल ज्ञाने
॥ पी० ॥ ५ ॥

|| ओ० टेर ||

चेत चेत रे चेत चतुर नर, आतम कारज करिये रे

|| ओ० १ ||

कर सिणगार नार मुख आगल, वेकर जोड़ी ऊभी रे।
ज्यारी पीड़ चटकदे चाल्यो, बिगड़ गई सहु सूधी रे

|| ओ० २ ||

चढ़ चकडोल खोल जर कसकी, मोहन माला गलमें रे
चढ़े दिन महक रही खुशबुइ, दिन छोड़ चल्यो इक पलमें रे

|| ओ० ३ |

रूप स्वरूप अनूप अनोपम, कंचन वरणी कायारे
दरपण निरख निरख सुख पावे, दिन पलमांगे कायारे

|| ओ० ४ |

लाख क्रोड़ गिरहु धन मेल्यो, कर कर कपट कमाई रे
गत दिवस दौड़े धन कारण, ए दिन भूल मिटाई रे

कर पप-पान खान रितु रितु ना, दिन दिन मांस वधायो रे
सूंख वरत पच्चखाण न दीसे, काल अचिन्तयो आयो रे
॥ ओ० ६ ॥

मोती कड़ा किलंगी ने कुंची, शीश मुकुट नग जड़ियारे
चऊं दिशी कटक खडा दे भोला, तेह अचानक पड़ियारे
॥ ओ० ७ ॥

"रतनचन्द" आनन्द सुधारस, प्रेम पियाला भरिये रे
अमृत जड़ी सुगुरू की सेवा, तिण सेती निसतरिये रे
॥ ओ० ८ ॥

२३

अभिमान त्यागो

तर्ज—

कर गुजरान गरीबी सुं, मगरूरी किस पर करता है ॥टेर।
ओछो रिजक अल्पसी पूंजी, क्यों पग चौड़ा धरता है
॥ कर ॥ १ ॥

बांकी पाग छिटकता [illegible]

बणी हद-सेज हेज कर सुन्दर, महल भला मन गमता,
गिट गयो काल उड्यो हंस राजा, मिटी न माया ममता है
|| कर || ४ ||

मोड़े अंग दौड़े चढ़ घोड़े, जोबन जोर दिखाता है,
निरखे नार अकल चढी चरखे, उठ अचानक चलता है
|| कर || ५ ||

अड़ब खड़ब रोकड़ धन मेल्यो, आण आण घर भरता है,
झुलनग काल गाब लेलेवे, हाय हाय कर मरता है
|| कर || ६ ||

चढ चकडोल करे रंग रेलां, मोह करी मन रचता है,
उकलगी काल की हंडिया, आय पड़े सोई पचता है
|| कर || ७ ||

करी उपदेश जोड़ जयपुर में, भविक हर्ष कर सुनता है,
"रतनचन्द" गुरुवचन सुधारस, मेट भयां दुःख मिटता है
|| कर || ८ ||

२४

परिग्रह त्याग

तर्ज—

हेरिए जग जंजाल सपन की माया, इस पर क्या गरभाणा रे
॥ टेर ॥

घट गई आयु रहन नहीं पावे, क्या राजा क्या राणा रे ॥हे॥१॥

कर में काच राख मुख निरखे, रूपदेख हरषाणा रे
सुन्दर नार खड़ी मुख आगल, सेवट वास मसाणा रे
॥ हे ॥ २ ॥

गादी बेस गर्व अति तोले, बोलें मगज भराणा रे,
अन्दर ज्ञान इतो नहीं सोचे, आपद निकट पयाणा रे
॥ ह ॥ ३ ॥

कर कर कपट निपट धन मेल्यो, संच संच इक दाणा रे,
मद छकियो मन में नहीं सोचे, सेवट माल विराणा रे
॥ ह ॥ ४ ॥

थोड़े दिवस कर्म बहु बांध्या, कर कर ने कमठाणा रे

सपने राज लह्यो सहु जग को, सिर पे छत्र धराणां रे,
जाग्यां पत्र छत्र की जाग्यां, मांग मांग अन खाणा रे
॥ ह ॥ ७ ॥

"रतनचन्द" जग देख अस्थिरता, निजगुण मन ठहराणा रे
अलख लख्यो सद्गुरु के वचने, पुद्गल भर्म मिटाणा रे
॥ ह ॥ ८ ॥

२५

नश्वर काया

तर्ज

थांरी फूल सी देह पलक में पलटे क्या मगरूरी राखे रे
आतम ज्ञान अमीरस तजने, जहर जड़ी किम चाखे रे
॥ थां ॥ १ ॥

काल बली थांरे लारे पड़ियो, ज्यों पीसे त्यों फाके रे,
जग मंजारी कुल का ईंटा, ज्यों मूसा पर ताके रे
॥ थां ॥ २ ॥

सिर पर पाग लगा खुशबोई, तेवड़ा छोगा नाखे रे,
निरखे नार पार की नेणे, वचन विषय किम भाखे रे
॥ था ॥ ३ ॥

इन्द्र धनुष ज्यों पलक में पलटे, देह खेह सम दाखे रे,
इण सूं मोह करे सोई मूरख, इम कहे आगम साखे रे
॥ था ॥ ४ ॥

"रतनचन्द" जग इनर्था, फंदिए कर्म विपाके रे,
शीव सुख ज्ञान दियो मोय सतगुरु तिण सुख री अभिलाखे रे
॥ था ॥ ५ ॥

२६

बलवान काल

(तर्ज—)

इण काल रो भरोसो भाइ रे को नहीं,
किण विरियां में आवेरे ॥ टेर ॥
बाल जवान गिणे नहीं, ओ सर्व भणी गटकावे रे ॥ इ १ ॥
बाप दादो बैठो रहे, पोतो उठ चल जावेरे.

|| इ० ४ ||

रोगी उपचारण भणी, वेद विचक्सन आयो रे
रोगी ने ताजो करे, अपणी खबर न कायो रे || इ० ५ ||

सुन्दर जोड़ी सारखी, मनहर महल रुपालो रे
पोल्या ढाल्या पे प्रेम सुं, आण पहुँचे कालो रे

|| इ० ६ ||

राज करे रलियावनों, जाणो इन्द्र अनूपम दीसे रे
वैरी पकड़ पछाड़ ने, टांग पकड़ ने चीसे रे || इ० ७ ||

वल्लभ बालक देखने, मांडी, मोटी आसो रे
पलक मांही परभव गयो, रह गयो आप निराशो रे

|| इ० ८ ||

नार निरख ने परणियो, जाणो अपसरा ने अनुहारी रे
सूल उठने चल दियो, ऊभी हेला पाड़े रे || इ० ९ ||

नटवो चढियो नाचवा, दाम लेवणरो कामी रे
पग छिटको पड़ियो तले, गयो काल अरामी रे

|| इ० १० ||

चेजारे चित चूपसुं, करी इमारत मोटी रे
जीमण उतरतो पच्यो, खायन सकियो रोटी रे
॥ इ० ११ ॥

सुर नर इन्द्र किन्नरा, कोई न रहे निशंकारे
मुनिवर कालने जीतिया, जे दिया मुगतमें डंकारे
॥ इ० १२ ॥

किशनगढ़ में संतसठे, आयो सेखे कालोरे
"रतनचन्द" कहे भवियण, कीजे धर्म रसालोरे
॥ इ० १३ ॥

२७

कथलो छोडो

(तर्ज—नवरसांनी देसी)

कथलो मांड्यो रे साधुजी करे वखाण सुणवो छांड्यो रे
॥ टेर ॥

कोई कहे म्हारो अरट्यो भागो, हाथ अंगुलिया सनीरे

एक कहे म्हारी बडियां बिगड़ी, लूण घणारा नाख्य १
एक कहे पापड़ लावणीयां, जीभ न चावे चाख्यो रे
॥ क० ३ ।

एक कहे म्हारे घृत नहीं घर में, डेग्णारी साल्यां टूटी रे
एक कहे जल पियो कलकल तो, कोर्ग मटकी फूटी रे
॥ क० ४ ।

कोई कहे हल्द मिरच बिन फीकी, नीकी नहीं तरकारी रे
कोई कहे पिंडो पड्यो खाली, मिले नहीं पणियारी रे
॥ क० ५

कोई कहे म्हारे सिर पर न ं.., ओढ़नो मिलियो काठो
एक कहे नहीं कंचुक सजरी, मावटो फेल्यो फाटो रे
॥ क० ६

कोई कहे म्हारो पूत न परण्यो, बहुरा पाव न लागई रे
एक कहे म्हारी पुत्री न हुई, पुंख्यो नहीं जवाई रे
॥ क० ७

एक कहे म्हारी बेटी मोटी, देखो अजय न परणी रे
एक कहें पइसो नहीं घर में, आई छ आगरणी रे
॥ क० ८ ॥

एक कहे हूँ पेटनी दाभी, हालरियो नहीं दीधोरे
एक कहे वहु घर में लाय ने, पूत परायो कीधोरे
॥ क० ९ ॥

एक कहे म्हारी बिछुडिया भागी, लंगर दीधा राली रे
कोई कहे चूंपा नहीं दांत में, नाक में सादी वाली रे
॥ क० १० ॥

कोई कहे तिमणियो नहीं पहर्यो, गलो अडोलो दीसेरे
कोई कहे वर मिल्यो भाड़ारो, नितका टोकरा वाँसेरे
॥ क० ११ ॥

कोई कहे अलतो नहीं घरमें, मूल न मेंदी राची रे,
एक कहे छाणां नहीं घरमें, रोट्या रह गई काची रे

थ खत्र सुणाया चात्रा, त जोंभडली ने बस रासो रे ॥ क० १

२८

सुकृत की सीख

(तर्ज—लाजिन लील करूंगी)

सुकृत करले रे मूंजी, थारी पड़ी रहेला पूंजी ॥ टेर ॥

कूड कपट करने चतुराई, घणी जमाई पेढी
भोला ढोला कान डकोना, थाने निकली सिढी
॥ सु० १

कूड कपट कर माया मेली, नीट नीट कर खरची
पाव पलक में परभव पहुँचो, पड़ी रही सब खरची
॥ सु० २

अधिको लेवे ओछो तोले, देवे मधुरी वानी

एंडा मारे घड़ी उडावे, कर कर अन्तर काणी
॥ सु० ३ ॥

कर्मादान अकारज करने, धन मेल्यो नवि खूटे
कुलजग काल रावले लेवे, बंध कायाना छूटे
॥ सु० ४ ॥

निखरो खाय पहरे पण निखरो, सुख भर नींद न सोवे
नर सुखियो दीठो नहीं इणसुं, तो पिण इणने रोवे
॥ सु० ५ ॥

पीपल-पान कान कुंजर को, डाभ अणी जल जाणो
इणसुं मोह करे सो मूरख, अन्तर-ज्ञान पिछाणो
॥ सु० ६ ॥

कमला-पतनी कमल हुई, एतो गणिका नारी
रावण कान अकाज करे नर, कर कर बात दगारी
॥ सु० ७ ॥

कोड थकी कंपिल नहीं धायो, आठमो चक्री देखो

राजा मुहता ने मांडवियां, हरि हलधर महाबलिया
माया नारी कामणगारी, कुण कुण मिनख न छलिया
॥ सु० १०

संवे काल कुचामण नगरे चेत महीने आया
"रतनचन्द" कहे मूंजी मिनखे, सेंठी पकड़ी माया
॥ सु० ११

--

२६

शिवनगरी और सिद्ध

[तर्ज—]

नगरी खूब बणी छेःजी, जिणग सिद्ध धणी छेजी ॥
देखण हूँस घणी छेजी, आगम वेण सुणी छेजी
॥ नगरी०

सम भूतल थी ऊंची अलगी, सात राज परमाणे

लाख पैंतालिस योजन चहुं दिश, ज्ञान बिना कुण जाणे
॥ न० २ ॥

स्फटिक रतन हार मोत्यांरो, संख समुज्वल दाखी
अर्जुन सोना मांहि मनोहर, वीर जिणेश्वर भाखी
॥ न० ३ ॥

दस दरवाजा हिवंड़ा जड़िया, पांच रहे नित खूटा (छूटा)
करो किल्लो कायम इक छिन में, आठ कर्म सूं छूटा
॥ न० ४ ॥

सुरनर असुर इन्द्रथी इधका, मुनिवर ना सुख जाणो
विणसुं अनंत अखे सुख तिणमें, कर्म हणीने माणो
॥ न० ५ ॥

तिरखा भूख सुख दुःख पुदगल, मूल न दीसे कोई
एक नहीं पिण रहे अनंता, नहीं वस्ती नहीं रोई
॥ न० ६ ॥

तिण नगरी में वसे धनवंता, चहुं दिश हुन्डियां चाले
माल खरीद लेवे चहुं गतनो, मूल न पाछो घाले
॥ न०

डोले नहीं रहे जग फिरता, दान नहीं पिण दायक
जावे छे पिण न आवे पाछा, सेवक नहीं कोई नायक

॥ न० ९ ॥

काया नहीं पिण अटल अवगाहना, आंख नहीं पिण देखे
धर्म पाप तो मूल न दीसे, जोग भोग नहीं एके

॥ न० १० ॥

महिपुर में शिवपुर ने गायो, पायो परम आनंदा
"रतनचन्द" कहे तिण नगरी बिन, कटे नहीं, दुःख फंदा

॥ न० ११ ॥

इकसठ साल रसाल नगर में, भल भादरवे गायो
काल अनंत रुल्यो चिहुं गत में, अब तो मारग पायो

॥ न० १२ ।

———

(३०)

सत संगत महिमा

तर्ज—पूर्ववत्

संगत खूब मिली छेरे,
चेत चेत रे चेत, चतुर नर बात भली छेरे ॥ टेर ॥

भवसागर में भटकत भटकत, मिनखा देही पाई।
शुद्ध आचारी सतगुरु मिलिया, प्रकटी बड़ी पुन्याई
॥ सं० १ ॥

हीरा, मोती, लाल, पिरोजा, वार अनंती मिलिया।
निरलोभी गुरु अबके भेट्या, भव भव फेरा टलिया
॥ सं० २ ॥

इण जग में बहु कपट निपट है, मंडी पैम की पासी।
सदगुरु शब्द हिये नहीं धरियो, तो ऋले जमारो जासी
॥ सं० ३ ॥

कुगुरु सुगुरु ने सम मत जाणो, बुधवंत कीजो निरणो।
गाय दूध सुं तृपति होणो, आक दूध सुं मरणो

मूल मिथ्यात दुरगत सा। , ।

सूत्र–समाध करी भव जीवां, कुगुरू संग द्यो छांडी

॥ सं०

काया माया बादल छाया, एक सरीखी जाणो ।

विषय–विकार खार सम जाणी, मन में समता आणो

॥ सं०

सुध गुरू बिन सुध ज्ञान न पावे, हिये विमासी जोवो

साधु असाधु बरोबर गिणने, हीरो जन्म मत खोवो

॥ सं०

काल अनादि अनंतो रूलतां, समकित रतनज लाधो

पांच प्रमाद टाल सहु अलगा, एकण चित्त आराधो

॥ सं०

एकत्र पाट माट में वरसे, चोमासो कियो पाली ।

"रतनचन्द" कहे सुणो भव जीवां, गुगुरू संग न्यो

॥ सं०

(३१)

समकित स्वरूप

तर्ज—

निर्मल शुद्ध समकित जिण पाई, जाके कमी रहे नहीं कांई
॥ टेर ॥

देव निरंजन गुरू निर्लोभी, धर्म दयामय जाणो ।
ने सिद्धान्त प्रमाण गिणीजे, जिणमें निर्वद्य वाणी
॥ नि० १ ॥

रंक थकी राजा पद प्रकटे, निर्धन थी धनवंत ।
समकित सुख रे जोड़े देतां, न आवे भाग अनंत
॥ नि० २ ॥

इण सम लाभ नहीं इण जग में, आगम वेद पुकारे ।
समकित विन सहुकाज अकारज, जैसो लिपण छारे ।
॥ नि० ३ ॥

अंक विना जिम सुन्न इविरथा, नाक विना जिम काया ।
शील विना जिम रूप अकारथ, दान विना जिम माया

समकित थी चारित्र होवे निर्मल, चारित्र थी सुख सारे।
केवल मोक्ष तणां सुख प्रकटे, जामण (जन्म) मरण
निवारे ॥ नि० ६।

षट खंड राज निधान-रतन-घर, सहस्र गमे घर नारी।
भरत निकाचित कर्मन बांध्यो, समकित नी बलिहारी
॥ नि० ७

कुंवारी कन्या सिर छेदयो, चोर चिलायति वन में।
उपसम लहयो ऋषीसर (ईश्वर) वचने, पार पामिया छिन
॥ नि० ८

कियो अघोर पाप परदेशी, सुणतां पिण मन धरके।
समकित थी सुरनो पद पायो, शिव जासी अवतरके
॥ नि० ९

सुंम वस्त पचक्खाण दीसे, श्रेणिक कृष्ण वदीता
समकित थी जिनवर पद पाया, पाप प्रभावने जीता
॥ नि० १०

गो ब्राह्मण ने बाल हत्या कर, नार हत्या पिण कीधी।
सम भावांथी समकित फरसी, सुरनी पदवी लीधी
॥ नि० ११ ॥

एम अनेक ओपमा करने, भिन्न भिन्न वीर वखाणी।
दोपण टाल समझ सुध करजो, रतन चिन्तामणि जाणी
॥ नि० १२ ॥

एकण घाट सित्तरमें वरसे, हर्ष सु शहर नगीने
"रतनचन्द" कहे समकित सेवो, जो चावो मुक्त रमणीने
॥ नि० १३ ॥

---

(३२)

चतुर नर चेतो

(तर्ज—हांरे नाजक गाड़ी वाला थारी गाड़ी)

चेत चेत रे चेत चतुर नर मिनख जमारो पायरे ॥ टेर ॥
आरज क्षेत्र उत्तम-कुल श्रावक, आयु निरोगी कायरे
चे० १ ।

|| चे० ३ ||

देव निरंजन अलख न लखिए, बाह्य[1]-दृष्टि लगाय रे।
मन वच काय ध्यावतां जिनवर, अवरन आवे दायरे
|| चे० ४ ||

गुरु गुरु करी जगत सहु इबो, गुण विन गुरु दुःख दायरे।
धोलो जाण अर्क पय पितां, जड़ा-मूल सूं जायरे
|| चे० ५ ||

नित पिंड मोल नर्गा नहीं शंका, आधा कर्मी खाय रे।
नरक निगोद में पड्या अनंता, साधु नाम धरायरे
|| चे० ६ ||

दूषण टाल गाल मद माया, छै बैठा मुनिराय रे।
ते गुरु वंद छंड सहु धंधा, जो शिवपुरनी चायरे
|| चे० ७ ||

अन्यमती जीव दया धर्म माने, मोटी जुगत लगाय रे।

---

१ पर्न एए, से

ते कर धर्म भर्म तज सघलो, न मरे जीव छः कायरे
॥ चे० ८ ॥

केवल पुंज पदारथ घट में, प्रगटे परचे पायरे
चंचल मेट करे चितथिरता, ते नूं धर्म संभाय रे
॥ चे० ९ ॥

देव गुरु धर्म पदारथ परखो, निरखो नैण लगायरे ।
या तीनां में चूक पड्यां थी, धका नरक में खायरे
॥ चे० १० ॥

कुंजर-कान पान पीपल को, इन्द्र धनुष देखायरे ।
काया माया बादल छाया, पल मे पलटी जायरे
॥ चे० ११ ॥

भटक्यो विविध परे सुख कारण, रंक जेम विललायरे ।
अखै खजानो कृपा करीने, सतगुरु दियो बतायरे
॥ चे० १२ ॥

गमी वस्तु घर मांही मूरख, बाहिर जोवण जायरे ।
ज्ञान गंगा प्रगटी घट अन्तर, राखे मेल बलायरे
॥ चे० १३ ॥

अड़सट साल पीठ पाली में, जेठ महीने आय रे ।

जगत सहु सपने की मायारे ॥ टेर ॥

तन धन जोबन पलक में पलटे, ज्यों बादल छांयार
॥ ज० १

पुद्गल फंद नो बंध इवरथा, भोला भरमाया ॥ ज० २

कंचन महल ने मोहन मूरत, ते सुत खिललाया ॥ ज० ३

निज मुख काच निरख सुख करते, सो छार करी काया
॥ ज० ४

चक्री वासुदेव थिर नहीं दीसे, अरु मंडलिक राया
॥ ज० ५

परमेश्वर एक पल न सुमरियो, धंधा ही में ध्याया
॥ ज० ६

वल्लभ बाल सुं आशा मांडी, पिण जाया सो ही जाया
॥ ज० ७

'रतनचंद' जग देख अथिरता, सत गुरु चरणे आया
॥ ज० ८

(३८)

ठगलगा तेरी लारे

तर्ज—

गाफिल केम मुसाफिर ठग लागा तेरी लार ॥ टेर ॥
एक बार ठगियो फिर न ठगावे, तूं ठगियो सौ बार
॥ गा० १ ॥
फल–किंपाक विषय सुख सेवन, फांसी बहु परिवार
ठग वनिता जिम वनिता जाणो, करसी तोय खुवार
॥ गा० २ ॥
मोह महीपत महा जोरावर, चहुँगत वर्णीय कंतार
ज्ञान-दर्शन-चारित्र धन लूटे, समझे नहीं गिंवार
॥ गा० ३ ॥
तूं सुख माने पुद्गल में, ते सुख दुःख अणुहार
निज सुख "रतन" अमोलक घट में, झट ले खोल किमार
॥ गा० ४ ॥

निरखने समभु सरधनां, मन में आवे लाज

कहे नंद मोहे जिन मोहन वरका

ऐड़ा मारने चड़ियां उडावे, सुधरी बद करने दिखावे
त्याग नहीं पाप को लागे, ते श्रावक किम उतरे पारो ॥ १ ॥

परनारी ने रहे तकता, जिम ग्रहण मांहीं फिरता मंगल
वचन वदे अति विकारो ॥ ते० २ ॥

धूंक न्याय ने पेट भरे, विश्वास देयने घात करे
लाजे धरम निंदे सुमारो ॥ ते० ३ ॥

नीर अणछाण्या मांही पड़े, भैंसा जिम पग ने गेल करे
वले पोतरा री नहीं परिहारो ॥ ते० ४ ॥

पंद्र-मूल भखे ने करे मूला, बहु बीजारो रांध करे होला
बलि बाते भखे लट- मंझारो ॥ ते० ५ ॥

वले गैर चले ने बोले अकड़ता, परनारी तके गल्यां फिरता
मदन मिले तो ल्यावे मारो ॥ ते० ६ ॥

१—हांसी का भेद

अछता कजिया मांहि मिले, कनड़ी साटे पेजार चले
यों उत्तम रो नहीं आचारो ॥ तं० ७ ॥
हुक्को पीवे ने मनमांस भखे, रात्रि भोजन निश दिवस तके
खातां खातां पड़े जीवें अंधारो ॥ तं० ८ ॥
कुलरी कूड़ी रूड ताणो, वलि खल गुड़ एक सयो जाणे
जिम मदे छकियो कोई नरनारो ॥ तं० ९ ॥
गुरु मिल्यां हीणाचारी, विरदाय किंयो आप इधकारी
चोर कुतिया मिल्यां किणरो सारो ॥ तं० १० ॥
ग्राहक मिलियां सखरी दाखे, छल बल करे निखरी नांखे
कूड़ा सोंस खाय केई अण पारो ॥ तं० ११ ॥
कमादान करे पन्दरे, वलि पत्थर फोड़ीयन विणज करे
वलि ऊंठ बलद रो लेवे भाड़ो ॥ तं० १२ ॥
चुगली खाय कहे अछती, पर घर बोवे (ले) नहीं सांच रत्ती
जाणो धर्मी ठग चुगला कारो ॥ तं० १३ ॥
वचन आडम्बर कहे अछतो, थोथो बादल जिम गरचंतो
लोक नी लाज नहीं लिगारो ॥ तं० १४ ॥

दृढ़ पड्यो श्रावक लागे । ने० १६

देव गुरु धर्म नहीं ओलखिया, धनि श्रावक में वाजे [illegible]

जिण अन्तर गत मांही अन्धागे ॥ ने० १७

जो तत्त्व तणो न करे निरणो, जिण अकलो मांड मेल्यो ...

किम उतरे भव जल पागे ॥ ने० १८

निरख देव देवी पूजे, जिण अन्तर गत मांही नहीं सूझे

मांहि अन्ध नागण ढागे ॥ ने० १९

इम सुणने ममता मेटो, एक देव निरंजन गुरु भेटो

जो थे चावो निस्तागे ॥ ने० २०

श्रावक सोजन्नी हरखीनी, चौमासे अजमेर में निरखी

'रतन' कहै गुणी नगनागे ॥ ने० २१



(३६)

सुमति विचार

तर्ज–

अब घर आवोजी

आवो आवो जी म्हारा मन-गमता[1] महाराज के

॥ अब० टेर ॥

सुमत सखी इम विनवे[1] साहिबा, लही समकित प्रस्ताव ।
राज अखंडित देखवारे साहिबा, मो मन अधिक उच्छावके
अब घर आवो ॥ १ ॥

हू तो अलादी हो रहो रे साहिबा, देख तिहारो ढंग
दिन दिन तूं भीनो रहे रे साहिबा, कुमत कुपातर संगके
॥ अब २ ॥

पर-पुदगल रुचि मद पियोरे साहिबा, छकियो रहे दिन रात ।
कुमत लपेटा ले रही रे साहिबा, कुण सुणे सुमत की बातके
॥ अब ३ ॥

दुःख विषम सुख अल्पता रे साहिबा, जैसो किंपाक ।
मही पुत्री[2] सिर नाखने रे साहिबा, न गिणे चढियो नर छाकके
॥ अब ४ ॥

जगत सिरोमणी शिवपुरी रे साहिबा, तिण में थारो राज।
जो अमृत सुख अनुभवे रे साहिबा जहर विषम कुण काजके
॥ अ० ७ ॥
जो मोक्ष करे एकला रे साहिबा, तो भाजे सहु भ्रांत।
निश्चल पद सुख भोगवे रे साहिबा, भांगे सादी अनंतके
॥ अ० ८ ॥
सहु सुख पिंड को एकठो रे साहिबा, वरगा वर्ग करंत।
तो पिण थारा राज में रे साहिबा, नहीं आवे भाग अनंतके
॥ अ० ९ ॥
सुमत मती हंस-राजवी रे साहिबा, मिलिया रूप अनुप।
"रतनचंद" ने सुख मिलिया रे साहिबा, जग गुरु आनंद-
रूपके ॥ अ० १० ॥

॥ ८७ ॥

संसार असार

(तर्ज-गुर्जरी राग)

तू किणरो कुण थारो रे चेतनिया ॥
मात पिता तिरिया सुत बंधव मतलब केरा यारो रे
॥ चे० १ ॥
जो स्वार्थ पूरो नहीं इणको, तो तोड़े जूनो प्यारो रे
॥ चे० २ ॥
सज्जन वल्लभ न्यावी गोती, है सब काल को चारो रे
॥ चे० ३ ॥
चार दिवस की है चतुराई, सेवट घोर अंधारो रे
॥ चे० ४ ॥
चेतन छोड़ चले जब काया, मिलगयो माटी में गारो रे
॥ चे० ५ ॥
"रतन" जतन कर धर्म अराधो, तो होसी निस्तारो रे

जोबनियां की मोज फज , ८

चेत चेत रे चेत चतुरनर, चिड़ियां चुग गई खेती रे
|| जो०

छिनक छिनक में आयुष्य छीजे, क्यों कडियावण एतीरे
ओछा जीतव कारण चेतन, पड़े मुगत सुं छेती रे
|| जो० १

मात पिता त्रिया सुत बन्धव, मिली सम्पदा एती रे,
पलक पलक में मचली पलटे, ज्यों भरियो रेती रे
|| जो० २

काल की फौज चढी सिर ऊपर, फिर लपेटा लेतीरे
अविचल सुख की चाय हुवे तो, प्रीत करो प्रभु सेती रे
|| जो० ३

जोबन लहर रंग पतंग सम, कहूँ मिलावण केती रे
इण में "रतन" दया गुण कारी, आराध्यां सुख देती रे
|| जो० ४

३९

भ्रमवश पड्यो रे

तर्ज—प्रभाती

उलटी चाल चल्यो रे जीवड़ला ॥ उ० टेर ॥

सांची सीख सुणे नहीं सरधे, मोह पिसाच छल्यो रे
॥ उ० १ ॥

स्वर्ग नी हूँस, नरक नी करणी, कर्म रे कीच कल्यो रे
॥ उ० २ ॥

आम नी हूँस धतूरो सींचे, कैसे आम फल्यो रे
॥ उ० ३ ॥

कमर बांध लाग्यो आश्रव में, संवर भाव टल्यो रे
॥ उ० ४ ॥

"रतन" जतन कर धर्म अराधो, नीठ ओ जोग मिल्यो रे
॥ उ० ५ ॥

निंदा न करिए रे चेतन पारकी, जोजो हिए विमास ।
ओगुण छंडी गुण संग्रह करे, ज्यों मृग नाभ सुवास
॥ निंदा० १
पूठ न सूझे रे प्राणी आपकी, किम सूझे रे पर पूठ ।
मर्म न मोसो रे किण रो न भाखिये, लाख लहे संधं
॥ नि० २
आतम खोजीरे आपो वश करे, तो लहे ज्ञान रसाल ।
ओगुण करतां रे प्राणी पारका, तो कहिए कर्म चंडाल
॥ नि० ३
पर निंदा सम पातक को नहीं, हुवे समकित नो रे नाश
आगम मांही जिन ओपमा कही, खावे पूठ नो मांस
॥ निंदा० ४
मांनी मौन ओगुण मन जाणजो, अवगुण आपरा देख
सुमरिन "रतन" जतन कर गमज्यों, तो पाम्यो गुण [illegible]
॥ नि० ५

४१

संत महिमा

तर्ज—राग कालंगड़ो

समझ नर साधु किनके मिन्त ॥ टेर ॥
होत सुखी जहां लहे बसेरो, कर डेरो एकन्त ।
जल सुं कमल रहे नित न्यारो, इण पर सन्त महन्त
॥ स० १ ॥
परम प्रेम धर नर नित ध्यावे, गावे गुण गुणवंत ।
तिलभर नेह धरे नहीं दिल में, सुगण सिरोमणि सन्त
॥ स० २ ॥
भगत जुगत कर जगत रिझावे, पिण नाणे मन भ्रान्त ।
परम पुरुष की प्रीत रंगाणी, जाणी शिवपुर पन्थ
॥ स० ३ ॥
"रतन" जतन कर सद्‌गुण सेवो, इणको एहिज तंत ।
इकभर महर हुवे सद्‌गुरु की, आपे सुख अनंत
॥ स० ४ ॥

बुढापो वैरी आवियो हो ॥ टेर ॥

मात पिता सुत बन्धवा हो, सगा सनेही मीत ।
परणी थारी पदमणी हो, ते पिण नहीं देवे चित्त
॥ बु० १

बोलतां जीभ लड़थड़े हो, काना सुणे नहीं वैण ।
नाक न आवे वासना हो, भर रह्या दोनों ही नैण
॥ बु० २

काया पड़गई जोभरी हो, पग पड़े नहीं ठांव ।
डांग पकड़ उभो हुए हो, अठी उठी गुड़ जाय
॥ बु० ३

दांत-सेन खोली पड़ी हो, फिर ग्या दोनूं ही होट ।
लागं ललके मुख थकी हो, आडे पड़ी जग तणी पोट
॥ बु० ४

माखलल खीणो पड्यो हो, मन पड़ गया रे जाग ।

निकली हाड री पासली हो, हो गयो धोलो पीर
॥ बु० ५ ॥
सांस खास वढ़ियो घणो हो, आवे मीट अपार
देहली होगई डूंगरी हो, सौ कोसां थयो रे बजार
॥ बु० ६ ॥
बात कहे वो हित तणी हो, तो नहीं माने कोय
साठी बुध न्हाटी कहे हो, सुणावे सामो रह्यो जोय
॥ बु० ७ ॥
जरा तणां दुःख छे घणा हो, कहतां न आवे पार
"रतनचंद" कहे भविजनां हो, थे कीजो धर्म विचार
॥ बु० ८ ॥

४३

सदगुरु की सीख

तर्ज—अब घर आवो हो लश्करिया

नीठ नीठ नरभव लह्यो रे जीवडला, तू पायो समकित रयण
सीख शुद्ध मानो रे सतगुरु की ॥ टेर ॥

मिल २ सघला बीछड़्या रे जीवड़ला, कोई जीम अंजली नीर ॥ सीख०

मांस भखे मद में छके रे जीवड़ला, चली कुल मर्यादा
घोर-कुव्यां में ऊपनो रे जीवड़ला, तोने चिकड्यो पगल्य ॥ सीख०

च्हुँ दिश खुशबोई खिली रे जीवड़ला, रहै सुधा में गर
रोग असाध्य जब ऊपनो रे जीवड़ला, तोने खिणमें [illegible] नगाव ॥ सीख

महल महल दुश्मन को रे जीवड़ला, कांई भारी कपड़ा प
काल अजाण्यो ले चल्यो रे जीवड़ला, जब कठे कमम' वैर[२] ॥ सीख

साजा सम्पूर्ण कामणी रे जीवड़ला, कांई जणी मनोहर
पूत मेल परभव गई रे जीवड़ला, या बात बड़ी अद्भुत ॥ सीख

---

१ — [illegible] २ — [illegible]

वेश बण्यो भूषण सिरे रे जीवड़ला, वले दर्पण में मुख जोय।
कोढ व्याप कीड़ा पड्या रे जीवड़ला, अब रही रूप ने रोय
॥ सीख ८ ॥
परनारी प्यारी करी रे जीवड़ला, वली डोढी निजर मिडाय।
भर मेले मोजां करे रे जी०, पिण काल वली गिट जाय
॥ सीख ९ ॥
कंचन वरणी कामणी रे जीवड़ला, वली भर जोड़ी भरतार।
दिवस चार को चांदणों रे जीवड़ल, सेवट घोर अंधार
॥ सीख १० ॥
वेस बण्यो अंग ओपतो रे जी०, कांई कर कर बणी जलस।
सूल व्याप सटके चल्यो रे जी०, थांरी रही हियारी हूँस
॥ सीख ११ ॥
चढ चाल्यो सारां सिरे रे जीवड़ला, म्हे फोजा तणां किवाड़।
वैरी छल कर घेरियो रे जीवड़ला, तने मारयो पकड़ पछाड़
॥ सीख १२ ॥
लोभ करी जोरे चल्योरे जीवड़ला, मैं सघला में सिरदार।

गादी चढ़ मोजा करे रे जीवड़ला, बले बदे गर्भ ना यो
कोप्यो नरपत बिगडियो रे जीवड़ला, अब तृणां बरोबर
॥ सीख १
सेज बणी कलसे फली रे जीवड़ला, बले बैठी पदमण प
हाव भाव बिभ्रम करे रे जीवड़ला, पिण गयो नरक दे
॥ सीख १
संग सहेली सोभती रे जीवड़ला, या गावे गुरभर गीत
रसियाने रिझावती रे जीवड़ला, पिण पड़ी अचानक
॥ सीख १
पर रमणी धपणी करी रे जीवड़ला, थे छोड़ सकल की
आव घटी नरके पड्यो रे जीवड़ला, अब कूट रह्या ज
॥ सीख १
डोरी कर घोरी करी रे जी०, तें लिया हजारां छोड़ ।
कोई नृपत दिखाड़ियो रे जी०, थारे माथो नाख्यो
॥ १

निपट कपट छल बल करी रे जी०, तैं द्रव्य धरयो एक लाख।
सुख विलसण के कारणे रे जी०, थारी हुई अचिन्ती राख
॥ सीख २० ॥

मन गमता भोजन करे रे जी०, तूं खट ऋतु मधुर पियूख।
अनंत बेर मिसरी भखी रे जी०, थारी अजे न भागी भूख
॥ सीख २१ ॥

मन गमती मोजां करे रे जी०, कर शुभरमणी सूं हेत।
ज्ञानदृष्टि सुं जोवतां रे जीवड़ला, थारी सेनट उड़गी रेत
॥ सीख २२ ॥

इन्द्रजाल सपना सभी रे जीवड़ला, या मिली वस्तु सब झूंठ।
तो पिण तूं समझे नहीं रे जी०, थारी गई हियारी फूट
॥ सीख २३ ॥

हीणाचारी गुरु मिल्या रे जीवड़ला, तूं तजे न कुलरी रूढ।
कुगुरु तणे संग बेसने रे जीवड़ला, अे गया अनंता मूढ़
॥ सीख २४ ॥

सुध पाले टाले मिरखा रे जीवड़ला, तू निर्लोभी गुरु सेव।
मुक्त वधू परणावसी रे जीवड़ला, वली करे विमाणिक देव

काया पिंड काचो राज काचो, छिनक में छीजे,
पलक में पलटे, भूल मत राचो राज ॥ टेर ॥

पलटता वार नहीं लागे पल ज्यूं, अर्क-ईसको मांचो
मौडल मसनद नृपन के सों छल, ने किम कर राचो
राज ॥ का० १

मरजी को जान दिवान धूम को, ज्यूं जल बीच पतासो
ज्ञाना होय निरख इण घट में, ए गिण बडो तमाशो रा
॥ का०

४५

गढ़ बांको

(तर्ज—वेलाउल-राग)

ओतो गढ़ बांको राज २, कायम करने शिव सुख चाखो राज
॥ ओ० ॥

आठ करम को घाट विषमता, मोह महीपत जाको ।
दुगतपुरी कायम की विरियां, विच २ कर रह्यो साको राज
॥ ओ० १ ॥

खांडे की धार छुरी को पानो, विषम सुई को नाको ।
कायम करतां छिन नहीं लागे, जो निजमन दृढ राखो राज
॥ ओ० २ ॥

जगत जाल की लाय विषमता, पुद्गल को रस पाको ।
रसकुं छोड़ नीरस होईजाओ, जगसुख सिर रज नाखो राज
॥ ओ० ३ ॥

"रतनचन्द" शिवगढ कुं चढतां, ऊठ ऊठ मत थाको ।
अचल अक्षय सुख छोड़ विषय सुख, फिर २ मत अभिलाखो

(तर्ज—राग बलावल)

आंटो कर्मा को राज आंटो०, गाढो म्हारे पड़ियो ।
हठ म्हारे पड़ियो सो तो अब काटो राज काटो ॥ आं०
पुद्गल जड़ मोय संग अनादिको, हूँ चेतन शुद्ध साटो ।
राग द्वेष न्यारी इनही के, निश दिन करे मानुं आंटो
॥ आं० १

समकित ज्योत उद्योत जगाइ, पंच विध कर पाटो ।
मोह महेन्द्र महा मदमातो, पैठो निज गुण लाटो ॥
॥ आं० २

४७

कलि युग की छायां

तर्ज—

कूवे भांग पड़ी रे संतो भाई कूवे भांग पड़ी रे ॥ टेर ॥

सांची सीख सुणे नहीं सरधे, सहु में आण अड़ी रे
॥ सन्तो० १ ॥

कुल की कार मर्यादा लोपी, चाले मगज भरी रे
॥ सन्तो २ ॥

भला घरां री सुन्दर बाजे, वेश्यामांही भिली रे
॥ सन्तो ३ ॥

सतगुरु नाम धरावे सघला, इन्द्रियां वश न करी रे
॥ सन्तो ४ ॥

"रतनचन्द" सुध धर्म न आराध्यो, तो आगे नरक खड़ी रे
॥ कुवे ५ ॥

(तर्ज—राग वेलाउल)

आंटो कर्मा को राज आंटो०, गाढो म्हारे पड़ियो ।
दृढ म्हारे पड़ियो सो तो अब काटो राज काटो ॥ आ०
पुद्गल जड़ मोय संग अनादको, हूँ चेतन शुद्ध साटो ।
राग द्वेष न्याती इनही के, निश दिन करे मासु आंटो
॥ आं० १

समकित ज्योत उद्योत दबाइ, पंच विध कर पाटो ।
मोह मलेच्छ महा मदमातो, पैट्यो निज गुण लाटो
॥ आं० २

वसु[१] कर्म वरगणा[२] घेर लियो मोय, दाव्यो निज गुण
हितकर एजाचू प्रभु तुम पै, फेर न रहे याको फांटो रा
॥ आ० ३

चहुँगतमांहि भम्यो चकरी जिम, निजगुण थइ उप
तिहुँ गुण "रतन" भये घट अन्दर कर्म कटक दल नाटो
॥ आं

४७

कलि युग की छायां

तर्ज—

कूवे भांग पड़ी रे संतो भाई कूवे भांग पड़ी रे ॥ टेर ॥

सांची सीख सुणे नहीं सरघे, सहु में आण अड़ी रे
॥ सन्तो० १ ॥

कुल की कार मर्यादा लोपी, चाले मगज भरी रे
॥ सन्तो २ ॥

भला घरां री सुन्दर वाजे, वेश्यामांही मिली रे
॥ सन्तो ३ ॥

सतगुरु नाम धरावे सबला, इन्द्रियां वश न करी रे
॥ सन्तो ४ ॥

"रतनचन्द" सुध धर्म न आराध्यो, तो आगे नरक खड़ी रे
॥ कुवे ५ ॥

चारित्र विभाग

१

धन्ना मुनि

तर्ज–

धन्ना हूँ वारी तो थांरी देह तणी छवि निरख धन्ना मैं वारी हो
॥ टेर ॥

छट छट[1] तप कर तन थयो खीणो, तपस्या दूकरकारी हो
॥ ध० १ ॥

किर किर हाड, नैन करे तिक तिक, प्रभात गगन मांही तारा हो
मांस रहित तन, हाड छवि बीत्यो दुर्गत ममता मारी हो
॥ ध २ ॥

भविक चकोर ज्यूं हरषे, सूरत सुरनर प्यारी हो ।
निरखी नैन श्रेणिक नृप वन्दे, वीर वचन उरधारी हो
॥ ध. ३ ॥

आतमज्ञान सुधारस[2] पीकर, निज आतम निस्तारी हो ।
"रतन" कहे धन धन्नों मुनिवर, क्रोड़ २ बलिहारी हो

वन्दू नित गजसुकमाल मुनीस ॥ टेर ॥
संजम ले शमशाने आया, मन में अधिक जगीश
॥ वं०
सोमल अगन करी उपसर्ग्यो, परजाल्यो रिख शीश
॥ वं,
खदबद खीच तणी पर सीज्यो, पिण नाखी मन री
॥ वं,
केवल लेय अभय पद पाम्या, अष्ट कर्म दल पीस
॥ वं,
"रतन" कहे इम मन थिर कीना, छे सुख विसव
॥ वं

(३)

धर्मरुचि अणगार

तर्ज—

मुनिवर धर्मरुचि रिख वंदूं ॥ टेर ॥
भव भव पाप निकाचित संचित, दुरमत दूर निकंदूं हो
॥ मुनि ॥

चम्पानगर निरुपम सुन्दर, उठे धर्मरुची रिख आया ।
मास पारणे गुरु आज्ञा ले, गोचरियां सिधाया हो
॥ मुनि १ ॥

नीची दृष्टि धरण सूं राखे, मुनिवर गुणभंडारे ।
भिक्षा अटन करंतां आया, नागसिरी घर द्वारे
॥ मुनि० २ ॥

खारो तूंबो जहर हलाहल, मुनिवर ने वहरावे ।
सहज उकरड़ी आई हम घर, बाहिर कहो कुण लावे हो
॥ मुनि ३ ॥

पूरण जाणने पात्रा फिरिया, गुरु आगे आय धरियो ।
कुण दातार मिल्यो रिख तोने, पूरण पात्तर भरियो हो
॥ मुनि ४ ॥

नाना करतां मुझने वहरायो, भाव उलट मन आणी ।

आज्ञा ले परठण ने चाल्या, निरवद्य ठोर रिखी आवे
बिन्दू एक परठतां ऊपर, कीड़ियां बहु मरजावे हो
॥ मुनि०

अल्प आहार थी एहवी हिंसा, सर्वथी अनरथ जाणी
परम अभयरस भाव उलट धरी, कीड़ियां री करुणा आ
॥ मुनि०

देह पडंतां दया नीपजे, तो मोटो उपकारो, ।
खीर खांड सम जाणी मुनिवर, ततखिण करगया आह
॥ मुनि०

प्रबल पीड़ शरीर में साली, आवण सगति थाकी, ।
पादोगमन[२] कियो संथारो, समता दृढता राखी हो
॥ मुनि० १

सर्वांथ सिद्ध पहुँचा शुभ योगे, महा रमणीक विमाण ।
चोसठ मण को मोती लटके, करणी ने प्रमाण हो
॥ मुनि० १

१—अस्वाद, २—वृक्ष की डाली की तरह लटकर संथारा

खबर करणने मुनिवर आया, रिखजी कालज कीधो ।
धिक धिक हो इण नागसिरी, ने, मुनिवर ने विष दीवो हो
॥ मुनि० १२ ॥

हुई फजीती कर्म बहु बांधी, पहुँची नरक दुवार ।
धन्य धन्य धर्म रुचि मुनिवरजा, करगया खेवोपार हो
॥ मुनि० १३ ॥

पैंसठ साल जोधाणे मांही, सुखे कियो चोमास ।
"रतनचन्द" कहे तिण मुनिवरं ना, नाम थकी शिव वास हो
॥ मुनि० १४ ॥

---

(४)
भवदेव मुनि

तर्ज–

मोटी जग में मोहनी ॥ टेर ॥
भवदेव जागी मोहनी, तज आयो हो सद्गुरु के संग ।
नागला आई वंदवा, रिख जाणी हो मन धरि उमग

रात दिवस हिवड़े वसे, हूँ आयो हो मन धर अभि
॥ मो०

सा नहीं चासी तुम भणी, किम होसी हो इक रंगी
मो विन सा दुःखणी होसी, हूँ जाणू हो म्हारा मन त
॥ मो०

हूँ ऊभी तुम आगले, मुनिवर जी हो इम झूंठ न बो
निकुच सुखांरे कारणे, थां दढता हो मनसा मत दो
॥ मो०

सुरपादप तज शोभतो, कुण घाले हो बांवल ने बाथ
हिरक हार तज हिये तणो, कुण घाले हो विषधर
॥ मो०

खीर खांड भोजन वमी, कुण वंछे हो नर रांक ।
त्यागनकर संग्रह करे, तिण नर ने हो दीजे धिःकार
॥ मो०

मंगल[१] तजने मलपतो, कुण राखे हो रासभ नी

---

१ भाभी

सुर सुख तजने नरक की, कुण मूरख हो मन करे प्रयास
॥ मो० ८ ॥

मद-मातो हाथी फिरे, अंकुश थी हो जिम आवे ठाम।
वचन सुणी नागला तणां, मुनि किया हो निश्चल परिणाम
॥ मो० ६ ॥

कर अनशन आराधना, रिख पाम्यो हो सुर नो अवतार
भव कर मुगत सिधाविया, एभाख्यो हो जिनवर विस्तार
॥ मो० १० ॥

अष्टादस वहोतरे, देवगढ में हो गाया मुनिराय
"रतन चंद" कहे मुनि तणा, पाय वन्दूं हो निज शीस नंवाय
॥ मो० ११ ॥

---

(५)

सती चन्दनवाला

तर्ज—

घन घन घन सती चन्दनवाला ॥ टेर ॥

यह जाइजा १ कभीतणा चाला ॥ धन०

माता मस्तक मूंडने दुःख दियो, सती मुंआरा मांही तेलो
सेठ आई ने काढी तत्काला ॥ धन०

छूणे छाज रे बाकला उडद तणा,
केई साधु आवेतो देऊं ५
घणी भूख ने देही सुकमाला ॥ धन०

श्री वीरजिनंद निजरे दीठा, सतीरे रोम रोम में लागे
सामो जोयने हो रही उजमाला ॥ धन०

एक बोल घटतो जाणी, आंखियां मांहि नहीं दीठो
वीर पाछा फिर गया तत्काला ॥ धन०

मैं पूर्वभव पातक करिया, जिन आय आंगण पाछा फि
नेणा नीर बहे जिम परनाला ॥ धन०

वीर पाछा फिर पारणो लीधो, जठे देवता आय मोहोत्सव
हाथ कंकण गल मोतियन माला ॥ धन० ६

मूला सुन दोड़ी आई, म्हारा रतन रखे लूंट्या जाई

जोयजो रे लोभ तणी झाला ।। घन० १० ।।
माजी थे तो कियो उपकारो, तरे वीरजिनंद लीधो आहारो
दुःख दीठा ते तो कर्मारा चाला ।। घन० ११ ।।
पछे वीर जिनंद केवल पाया, जठे सती भणी देवता लाया
संयम ले छोड्या जंजाला ।। घन० १२ ।।
छत्तीसहजार री हुई गुरुणी, सती उत्कृष्टी कीधी करणी
केवल ले काट्या करम जाला ।। घन० १३ ।।
मृगावती जैवंती जाणी, ज्यांरी चेल्यां हुई राजारी राणी
चेल्यां सहु रतनारी माला ।। घन० १४ ।।
कर्म खपाय सती मुगत गई, जठे जन्म जरा और मरण नहीं
मेटी मोह मिथ्यात तणी झाला ।। घन० १५ ।।
पूज्य गुमानचंदजी गुरू पाया, तरे सती तणा गुण मुख गाया
"रतनचंद" करी ढाल सुविशाला ।। घन० १६ ।।

शुद्ध पौषध प्रतिमा पालिए हो, टालीजे आतम दोष
निज आतम ने वस करो हो, जो वेगी थे चाओ
॥ शु

पोतनपुरी नगरी तणो हो, चन्दावतंसक ईश ।
दृढधर्मी दृढ आतमा हो, जिणमें पूरण गुण इकवं
॥ शु

महल मनोहर सुन्दरु हो, निरवद जायगा जाण ।
पोसह कर काउस्सग कियो हो, दोय पग पर रह्
॥

दासी नाम मृणालिका हो, तन चाकर सरदार ।
दीपक कीयो महल में हो, रखे व्यापे घोर अंधार
॥

जहां लग ज्योत बुझे नहीं हो, मोने त्यां लग
दृढ कर मन तन वस कियो हो, जिण अभिग्रह
॥

पहर निशा बीती जिसे जी, बुझवाने हुयो तेयार ।
रखे तिमिर हुवे रायने, तिणसुं तेल भर गई नार
॥ श्रु० ६ ॥
टूटे नाड्यां पग थकी जी, छूटे छः निज प्राण ।
ऊठे सरणा अंग में हो, पण राख्यो निश्चल ध्यान
॥ श्रु० ७ ॥
अर्ध निशा ने अवसरे जी, आवी फेर हजूर ।
तेल घटंतो देखने हो, वलि दीपक भर गई पूर
॥ श्रु० ८ ॥
व्यापी प्रबल वेदना हो, पीडित थयो शरीर ।
पग धूजे धूजे नहीं हो, पण अंग अंग में पीर
॥ श्रु० ६ ॥
तन सेवा करवा भणी जी, आई तीजा पहर समीप
भगति भाव कर तेल सूं वलि, पूरण भर गई दीप
॥ श्रु० १० ॥
चोथा पहर नी वेदना हो, अनंत अनंती होय ।
गिरिया गिरिवर टंक ज्यों पिण, चल-चित्त न हयो कोय

म , या म धम नो प्रेम
"रतन चन्द" कहै श्रावकां हो, शुद्ध पौषध कीजो एम
॥ शु० १

---

(७)

विजय सेठ--विजया सेठाणी

तर्ज—

धन धन श्रावक पुण्य प्रभाविक, विजय सेठ ने सेठाणी
॥

शुक्ल-पक्ष विजया व्रत लीनो, सेठ कृष्ण पक्ष रो जाणी
॥ धन० १

सज सिणगार चढी पिउ मन्दिर, हेज भरी हिये हरखाणी
॥ धन० २

तीन दिवस शुभ व्रत तणां छे, सेठ कहे मधुरी वाणी
॥ धन० ३

वचन सुणी नेणां नीर ढलियो, वदन कमल थई विलखाणी
॥ धन० ४ ॥
शुक्ल-पक्ष व्रत गुरु मुख लीधो, अब परणो बीजी सहाणी
॥ धन० ५ ॥
भवर नार सहु बहन बरोबर, धन श्रीरत्न धारी जाणी
॥ धन० ६ ॥
हिये हार सिणगार सजी तन, काम घटा जिय उलटाणी
॥ धन० ७ ॥
एक सेज धर हेज प्रबल, तो पिण मन राख्यो ताणी
॥ धन० ८ ॥
वर्षाकाल विद्युत घन गाजे, चौधारा बरसे पाणी
॥ धन० ९ ॥
मन वच काय अखंडित निर्मल, शील राख्यो समता आणी
॥ धन० १० ॥
षट् रितु वर्ष दुवादस निर्मल, सरस सम्बन्ध ए अधिकाणी

॥ धन० १

"रतनचंद" पाय नितप्रति वंदे, केवल ले गया ^

॥ धन० १

पूज्य गुमानचंदजी गुरु मिलिया, सेठ कथा ज्यांरे मुल

॥ धन० १



८

अरणक श्रावक

तर्ज—

धर्म आराधिये रे, अरणक श्रावक जेम ॥ टेर ॥

चम्पा नगर थी चालियो जी, सागर में चढ जहाज

लोक अनेक लारे हुवाजी, धन लावण ने काज

॥ धर्म० १

इन्द्र प्रशंसा अति करी जी, सुर नर मिले अनेक ।

तो पिण अरणक नहीं चलेजी, तब चाल्यो सुर एक
॥ धर्म० २ ॥

दांतश्रेण खुरपा जिसा जी, लोयण[1] राता लाल ।
भृकुटि[2] भाल[3] अशोभती जी, मुख थी मूके झाल
॥ धर्म० ३ ॥

मस्तक माला कंठमें जी, अहिश्काने खड्ग हाथ ।
रूप कुरूप डरावनो, जाणे अमावस्यारी रात
॥ धन० ४ ॥

दीर्घरूप आकाश में, देखे भवहण[4] लोक ।
छोड़ धर्म तूं अरणका, केह देखूं जहाज डुबाय
॥ धन० २ ॥

माठा[5] लखणा रा धणी, तूं मान रे मूरख बात ।
हरगिज आज छोडूं नहीं रे, करमूं थारी घात
॥ धन० ६ ॥

अरणक अणसण उचरे जी ...

|| धन० ८ |

लोकज लाग्या धूजवाजी, आया अरणक गोड़[१] ।
मारे दैत्य अभागिया जी, धर्म ने दे तूं छोड

|| धन० ९ |

तो पिण अरणक नहीं चल्यो जी, लीधी जहाज उठाय ।
लोक कहे रे पापिया, देसी पाणी में डबकाय

|| धन० १०

सुर पिण कोलाहल करे जी, लोक पिण लागा लार ।
पिण मन वच काया करी जी, चलियो नहीं लगार

|| धन० ११

तब सुर रूप प्रगट कियो जी, लागो अरणक पाय ।
कुण्डल जोड़ी भेटदे जी, आयो जिण दिश जाय

|| धन० १२

कुण्डल अरणक लेइने जी, मूंप्या कुम्भराय ने आण ।
कर अनशन आराधना जी, पाम्यो देव विमान

|| धन० १३

चविने मुगत सिधावसी जी, ज्ञाता में अधिकार।
"रतनचंद" गुण गाविया जी, बीकानेर मंझार
॥ धन० १४ ॥
गुणसठ माघ शुक्ल पखेजी, पांचम ने गुरुवार।
समकित धरमं आराधजो जी, साम्भल ए अधिकार
॥ धन० १५ ॥

९

गज सुकुमाल मुनि

(तर्ज—साहिब सीधो अरनाथ अ०)

तुम पर वारी हूँ वारी जी वार हजारी, तुम पर वारी
॥ टेर ॥
देवकी नंद शिरोमण सुन्दर, नेम तणी सुण वाणी।
तज संसार संजम आदरियो, अतुल वैराग्य मन आणी
॥ तुम० ॥

नेत्रदृष्टि मांडी अंगुष्ठे, श्रेष्ठ सकल विध साजे ।
राचे आतम-राम तणे रस, पूरव पातक भाजे
॥ तुम० ४

मुनिवर मेरू-शिखर जिम निश्चल, कर्म काटन महाबलि
देखी गज मुनि श्वान ज्यूं सोमल, क्रोध करी परजलि
॥ तुम० ५

मस्तक पाल बांधी माटी री, मुनिवर समता भरिया ।
भग भगता खेर ना खीरा, मुनिवर ने सिर धरिया
॥ तुम० ६

खदबद खीच तणी पर सीझे, तड़ तड़ नासा टूटे ।
मुनिवर समता भाव धरी ने, लाभ अनंतो लूटे
॥ तुम० ७

अन्तसमय केवल उपराजी, त्याग उदारिक देह ।
अक्षय अटल अवगाहन करने, अनंत चतुष्टय लेह
॥ तम०

अल्पप्रव्रज्या ने अतुल परीसो, अन्तसमय गढ लीधो ।
ठाणायंग-अन्तगढ में देखो, उत्तम कारज कीधो
॥ तुम० ९ ॥

"रतनचंद" कहे ते मुनिवर ना, नाम थकी निस्तारो
शहर नगीने जोड़ करी है, मधु-मासें गुरुवारो
॥ तुम० १० ॥

१०

जम्बुकुमार

तर्ज—

सुण सुण सुन्दरू रे, भोग पुरन्दरू रे,
वहाला, म्हारी अबलानी अरदास ॥ टेर ॥

ऋषभदत्त ने धारणी अंगज, नामे जम्बूकुमार ।
सुधर्मा स्वामी तणी सुण वाणी, संयम ने हुआ तयार
॥ सुण० १ ॥

॥ सुण० ३

मन मोहन बैठा मंडप में, थे हम प्राण आधार।
लुल लुल लटका सरक बीनवां, जोवो आंख उघार
॥ सुण० ४

परणी ने धरणी कर लाया, पल पूरी कियो ध्यान।
कपट करी ने धर्मी होणो, कौन सिखायो थांने ज्ञान
॥ सुण० ५

मोह वचन महिला[1] मन गमता, सुण्या श्रवण मंझार
कनकाचल[2] सम काया कीनी, धन धन जम्बूकुमार
॥ सुण० ६

प्रभवो सुन्दर सहु समझावी, भेट्या सुधर्मस्वाम।
"रतनचन्द" कहे ते मुनि वंदूं, पाम्या अविचल धाम
॥ सुण० ७

११

जयवंती श्राविका

तर्ज--

म्हारा ज्ञानी गुरु नी वाणी हो अमृत सारखी जी ।
समझे नर उत्तम, जो होवे मानव पारखी जी ॥ टेर ॥
नगर कोशांबी उदाइ महाराय,
राज जी हो चरम जिनंद समोसर्या ।
जैवंती भेत्या जिन पाय,
राज जी हो राज उज्जल निर्मल गुण भर्या ॥ म्हा० १ ॥
जैवंती पूछे कर जोड़ राज-जी हो,
राज-भारी हुवे किम जीवड़ो । म्हा० ।
सेवे पाप अटारे अघोर राज-जी हो,
राज-जिए सूं न छूटे जगको छेवड़ो ॥ म्हा० २ ॥
भव अभव दोनूं ही रास राज जी हो,

एक प्रदेश न जावे मोक्ष में ॥ म्हा०
सूतो भलो के जागतो जीव राज, हो राज जी,
धर्म कमावे सो रूडो जागतो ।
जिणरे घोर मिथ्यातरी नींद राज, हो राज जी
सूतो रूडो, नहीं पाप लगावतो ॥ म्हा०
आलस उद्यमी दुर्बल दृढ शरीर राज, हो राज जी,
एकण रीते सहु जिण दाखिया ।
सीखे ज्ञान ने टाले सहु नी पीड राज, हो राज जी,
ते तो रूडा श्री जिन भाखिया ॥ म्हा० ६
सेवे इन्द्रिय विषय तेवीस राज, हो राज जी,
चार कषाय सु' जग मांही रूले ।
वस करे इन्द्रिय जीते रागने रीस राज, हो राज जी,
ते तो नर शिव सुख मिले ॥ म्हा० ७
सुण सुख वाणी पामी परम वैराग राज, हो राज जी,
केवल पामी चारो संघ में, म्हा०

मुगत नगर पहुँची महाभाग राज, हो राज जी,
भाखी जिन दाखी भगवति अंग में ॥ म्हा० ८ ॥
साल बयांसी जोधाणे चोमास, राज हो राज जी,
"रतनचंद" गुण गाविया म्हा० ।
नैवंती नो प्रश्न विलास राज, हो राज जी,
सांभल श्रवणे सहु सुख पाविया ॥ म्हा० ६ ॥

१२

धन्ना मुनि

(तर्ज—नेण भकोले)

तुम पर वारी जी वीरजी बखाणी हो, मुनीसर करणी आपरी
॥ टेर ॥
नगरी काकंदी से मुनीश्वर आपज अवतरया, भेट्या श्री जगदीश
नार बतीसे हो मुनिश्वर अपसरसी तजी, सोनेय्या क्रोड़ बतीस
॥ तुम० १ ॥
उग्रतपस्या हो मुनिवर छट्ठतप आदरयो,

पूछे श्रेणिक भूप ।। तुम०

सुगति ने मारग हो जिनेश्वर सहु उद्यम करे,

इण में कुण

श्री मुख भाखे हो नरेश्वर तपस्या में सिरे,

धन्य धन्नो अणगार ।। तुम०

सुण सुख पायो नरेश्वर आयो रिख कने, नीचो नमाई शी

अंग नमाई हो नरेश्वर, दी प्रदक्षिणा, मेट्या मगधाध

।। तुम०

गुण सिन्धु पूरा हो मुनीश्वर चरमसायर' जिसा,

अचाई रिखर

कुमत त्रिहंडो हो मुनीश्वर खंडो कर्म ने, सारो वंछित

।। तुम०

मास संथारो हो मुनीश्वर स्वार्थ सिद्ध लह्यो,

कर्म भरम दिया त

क्षेत्र विदेह में हो मुनीश्वर मुगत सिधावसो,

"रतन" कहे कर जोड़ ।। तुम

१३
देवानंदा का अविचन्ह

तर्ज–

ऋषभदत्त ने देवानंदा नार, रथ पर रेर वेसीने वंदन संचरया रे
॥ टेर ॥

दीठोरे अति मीठो वीर दिदार, नायक रे २,
सुख दायक निरमल गुण भर्या रे ॥ १ ॥
स्फटिक सिंवासण वैठा वीर जिणन्द, अनमिखरे २,
नेणे भर निरखे वीर ने रे ।
हुलसो रे अंग ऊपनो परमआनन्द, फूली रे २,
सुध भूली मगन शरीर में रे ॥ २ ॥
विकस्यो रे अंग छूटी कंचुक डोर, झारिया रे २,
वलि लायो खीर[1] पयोधर[2] रे ।
पूछे रे गौतम गणधर कर जोड़, वाई रे २,
बीजी नहिं कोइ इण परे रे ॥ ३ ॥

दुःख स्वामी सुख नयण थकी
इसड़ा रे सुख दायक मिळ्या[1] सैण, अब तोरे २,
हिवे प्रीति करूं अविचल अखीरे ॥
जग तज रे केहुं लीधो संजम भार, पाल्यो रे २,
दुःख टालियां चउविह संघ में
मास संथारे पहूँची मुगत मझार, भाख्यो रे २,
जिन दाख्यो भगवति अंग में रे ॥
जननी वच्छल सुख दायक महावीर, पहली रे २,
शिव मेली उर वासो वसी
"रतनचंद" ने राखो चरणा री तीर, पाली रे २,
चौमासो वरस कियो अर्सी रे ॥

१ मिलिया पाठान्तर

१४

मंडूक श्रावक

तर्ज–

वीर वखाण्यो हो श्रावक एहवो रे ।। टेर ।।

नगरी तो राजगृही रा बाग में रे,

हां रे कांई समोसर्या महावीर रे,

मंडुको तो श्रावक निरमल गुण धणी रे,

हां रे कांई चाल्यो भगवंत तीर रे ।। वी० १ ।।

बिच में तो मिलिया बहु अन्य तीरथी रे,

हां रे कांई बोल्या इण पर बैणरे ।

पांच अरूपी वीर वखाणिया रे,

हां रे कांई तूं देखे निज नेण रे ।। वी० २ ।।

अछता तो वीर कदे भाखे नहीं रे,

हां रे कांई देख्या श्री वीतराग रे ।

बिगर मिले ... रे

हारे थांने श्रद्धयां तो लागे मिथ्यात् रे ॥ वी०

उगत न उपजी अण बोल्या ह्यरा रे,

हांरे कांई किम्ह कियो मि

धर्म छिपायो आयो हरख सूं रे,

हांरे कांई भेट्या श्री जगनाथ रे ॥ वी

अण दीठी दीठ कहीने जो दाखता रे,

हांरे कांई होतो समकित

चारूं संघ में तो जस अति पामियो रे,

हांरे कांइ श्रीमुख दी शाबास रें ॥ वीं०

एक भव तो करने मुगत सिघावसीरे,

हांरे कांई भाख्यो वीर

समत चोरासी पाली पीट में रे,

हांरे कांइ एम कहे "रतनचंद" रें ॥ वीं०

१५

पूज्य श्री गुमानचन्द जी महाराज

दोहा-गुणवंत गुरु रा गुण कियां, समकित होय उद्योत ।
ज्ञाता में जिनवर कह्यो, लहे तीर्थंकर गोत ॥ १ ॥
जेहना गुण अनेक छे, कहो कुण सके जोड़ ।
पिण लवलेस इहां कहूँ, पूरण मो मन कोड़ ॥ २ ॥

चाल-ईडर आंबा आमली रे ॥

ढाल-सहर सुभट पुर शोभतो रे, मरुधर देश विख्यात ।
अखेराज कुल मेसरी रे, चैना नामे मात हो ॥ १ ॥
पूज्य श्री थे गिरवा ने गुणवन्त ॥ टेर ॥
बड़ी पुन्याई मातरी रे, जनम्यो पुत्र सुजात ।
करण मुहूर्त भल आंवियो रे, हुतासन री रात हो
॥ पूज्य० २ ॥
पिंडत जन ने तेडिया हो. लगन लियो ... –च

लघुवय में गुरु भेटिया रे, प्रगट्यो परम वैराग ।
आप भणी प्रतिबोधने रे, दीधो संसार ने त्याग हो
|| पूज्य०

बालवै बुध आगला रे, सुरगुरु रे अनुहार ।
वदन कमल सरसति बसे रे, वचन सजल घनधार ह
|| पूज्य०

सूत्र सिद्धान्त प्रबंध सूं रे, भणिया अंग उपांग ।
मूल छेद उर धारिया रे, जाणे गंग तरंग हो
|| पूज्य०

शब्द विविध उत्पात सूं रे, ओलखिया प्रबंध ।
गणित ग्रंथ अलंकार में रे, मेलै संदो संध हो
|| पूज्य

नय गुर सप्त पदार्थ रे, कर्मप्रकृति भंग भेद ।
वचन सुण्या श्री पूज्य ग रे, संसय तिमिर विच्छेद

मंडन श्री जिनधर्मना रे शासन रा सिणगार हो
॥ पूज्य० १० ॥

स्वमत परमत जाणया रे, तुरंत जवाब तैयार ।
जे देख्या ते जाणसी रे, गुण रो छे नहीं पार हो
॥ पूज्य० ११ ॥

दोहा—साधु सर्व मिली करी, कीधो क्रिया उद्धार ।
आज्ञा नहिं जिनराज री, एह शिथिल व्यवहार ॥ १ ॥
कीधो संजम निर्मलो, बड़लू ग्राम मंझार ।
निज आतम निस्तारवा, झाली तप तलवार ॥ २ ॥

चाल—चारणी मनावे हो मेघ०

ढाल २—धर्म दीपायो हो, पूज्य वीतराग रो जी ॥
गुमानचंदजी मुनिराज, भवजल तारण, सहु भवजीवने जी
अभिनव प्रकटी जहाज ॥ धर्म० १ ॥

भविजन हरखे निरखे नयन सूं जी, मूरत मोहन वेल

॥ धर्म० ४ ॥

वचन सुधारस वरसे वदन थी जी, सुणतां मंगल माल।
हृदय सरोवर थी गंग प्रकटी जी, जाणे सागर री परनाल

॥ ध० ५ ॥

हेतु दृष्टान्त जुगत मेलै घणी जी, वचन सुहावणा मीठ।
निरखतां नयण कदे धापै नहीं जी, लोयण अमिय पैईट

॥ ध० ६ ॥

वाणी गहरी गरजव मारखी जी, भविक मोर हरखाय।
मूल मिथ्यात मेटे मन भरम रो जी, शिव पंथ शुद्ध बताय

॥ ध० ७ ॥

शहर मेड़ते कीधी विनती जी, आप रह्या चौमास।
बेले बेले मांडयो पारणो जी, आणी हरख हुलास

॥ ध० ८ ॥

देश देश री आई विनती जी, सहु रे दर्शन री चाय ।
केई तो आइने चरण भेटिया जी, घणा रे रही मन मांय
॥ ध० ९ ॥

तपतज व्याप्यो आण शरीर में जी, पिण दृढता अणपार ।
कातिवद आठम सुरगति लही जी, च्यार पोहर संथार
॥ ध० १० ॥

मञ्झ आउखो पायो महामुनि जी, उत्तम पुरुष स्वभाव ।
पिण प्रश्न पूछण देखण तणो जी, रह्यो घणा रे चाव
॥ ध० ११ ॥

श्रुतकेवली था भरत क्षेत्र में जी, मोटी पड़ी अन्तराय ।
कल्पवृक्ष कहो किम ठाहरे जी, मरुधर देश रे मांय
॥ ध० १२ ॥

पंडित मरण सुधार्यो महामुनि जी, कियो घणो उपकार ।
कुत्यावण री हाट समा हुआ जी, ज्ञान दान दातार

"रतनचन्द" दिन रयण सिमरे, पूज्य रो उपगार है ॥

१६

पूज्य श्री दुरगादासजी महाराज रा गु

विनै मूल जिनधर्म छै, मर्म पणासण सूर ।
फल प्रगट दिन दिनकरे, बोध बीज आंकूर ॥
तीर्थंकर पद संपजे, गुरु गिरिवा गुणवंत ।
आगम अथ विचारतां, एह मुगत नो पंथ ॥ २ ।

चाल—हांजी मोरा जनम मरण रा साथी० ॥

हांजी मोरा सतगुर जी उपगारी, थांरी कोड़ कोड़ ब
गुरु विना ज्ञान ध्यान नहीं प्रगटै, मिटै न मोह विकार
समकित माल समापण काजे, सतगुरजी वोपारी
॥ हांजी०

मरुधरदेश में गांव सालरिया, अवतरिया अवतारी ।
ओस वंस सिवराज पिता तुम, सेत्रा दे महतारी
॥ हांजी० २ ॥

तांवर जन्म लियो पट् समते, सुभ वेला सुभ वारी ।
बाल लीला कीधी लघु वय में, मोहदसा मन धारी
॥ हांजी० ३ ॥

श्री मुख नैन नासिका सोहे, मूरत मोहनगारी ।
वर्ष चतुरदश दास दुरग रिख, होय रहे संसारी
॥ हांजी० ४ ॥

गुरु बहु निरख परख गुर भेट्या, कुल लग गुरु गुणधारी ।
सुण उपदेश रहस्य धर घट में, निज आतम निस्तारी
॥ हांजी० ५ ॥

बुद्ध अतसुद्ध कला बहु फैली, भणिया अंग इग्यारी ।
मूल छेद ने सप्त निखेपा, हुवा ज्ञान भंडारी
॥ हांजी ६ ॥

सुस्वर कंठ, विशाल वचनसु, करै राग उपचारी ।
श्रावक वर्ग सोहे मुख आगल, मानं ऽस्मर ऽस्मारं

"रतनचंद" उपदेश सुणी नैं, लिया सीस गुरु धारी

॥ ढाली० ६ ।

—

१७

दोहा–जिन आज्ञा अनुसार थी, उज्वल निर्मल बुद्ध ।

गुरु गुमान कै ज्ञान थी, कीधो संजम शुद्ध ॥

ढाल—चाल—नाजकड़ी माहरा आवैः ॥

श्री पूज्य तणा गुण भारी, नित सुमरो नर नारी रे ।

ए तो दुरग तिर्पा सुख कारी ॥ नित ॥ श्री पू० टेर ।

वस्त्र अरु पात्र, आहार अने थानक, निरदोषण आदरिया

आगम अर्थ तणें अनुसारे, पाले निरमल किरिया रे

॥ श्री पू० १ ।

परिसा सरव सह्या वसुधा जिम, मेरु ज्युं अचल अडोले

कूड़ कपट छल छिद्र निवारी, वचन सुधारस बोले रे

॥ श्री पू० २ ॥

तप परभाव सुभावे अतसै, सन्मुख कोई नहीं मंडै ।
स्याद्वाद चरचा अनुसारे, पाखंडी मत छंडै रे
॥ श्री पू० ३ ॥

विचरै ग्राम नगर पुर पाटण, ज्ञान ध्यान का दरिया ।
निरखी नैन भविक जिन देखे, ते भव सागर तिरिया रे
॥ श्री पू० ४ ॥

सहर सुभटपुर श्रावक सहु मिल, हित सुं करी अरदास ।
किरपा कर करुणा के सागर, आप रह्या चौमास रे
॥ श्री पूज्य० ५ ॥

वास इकांतर किया निरंतर, छठ्ठ आठम वले टाणें ।
निज पिंड बल खीणों अवलोके, आप रह्या थिर थाणे रे
॥ श्री पू० ६ ॥

समत वयांसी ने तणी चौमासी, सावण सुद ससि वारो ।
तिथ एकादसी अष्ट पोहर नो, कियो चोविहार संथारो रे
॥ श्री पू० ७ ॥

त्याग वैराग कियो नरनारी, काम तज्यो नर कामी ।
कीरत फैल रही ...

गुरु गुण गूंथ [illegible]

मुगत महल की महल करण नै, गुरु चरणां सिर नावै र

॥ श्री पू० १०

वर्ष छिहंतर मर्व आनन्दा, पामी रिख हुलेस ।

"रतनचंद" कहै गुरु किरपा सूं, प्रगट्यो ग्यान विसेस

॥ श्री पूज्य० ११

चारित्र विभाग समाप्त

परिशिष्ट

दरसण कीधां पूजरां अशुभ करम जावे नाठ लालरे
॥ रतन० १

रतनमुनि महारे मन वसे, मोटो जस उपगार लालरे
काटो संसार क्लेश ने, मीठा वचन उच्चार लालरे
॥ रतन० २

देत भली धर्म देसणा, गरजै केहर जेम लालरे
मद उतरे पाखंड नों, बल न रहे गज जेम, लालरे
॥ रतन० ३ ।

तारां रा टोला मध्ये, जेम चन्द्र के मांड लालरे ।
शोभे चतुर विध संघ में, धरम देशना मांड लालरे
॥ रतन० ४ ॥

वरसे श्रीमुख मेघ ज्यूं, वचन धारा आगमास लालरे ।
फूले भविजन ओषधी, जरत मिथ्या तज त्रास लालरे
॥ रतन० ५ ॥

कुतियावरनी दूकान में, वस्तु चहै सो तैयार लालरे ।
तिम श्री पूजने भेटीया, पावे वंछित सार लालरे
॥ रतन० ६ ॥
महिमा देस प्रदेस में, फैली ठामो ठाम लालरे ।
अतिसे पूज तणा इसा, पाखंडी करत प्रणाम लालरे
॥ रतन० ७ ॥
खत्री सेठ सेनापति, मुसद्दी उमराव लालरे ।
कायथ ब्राह्मण ने प्रजा, भेटे श्री पूज रा पांव लालरे ॥
॥ रतन० ८ ॥
केई वंदत निंदत केई, तो पिण समता भाव लालरे ।
वसुधा जिम परिसा सह्या, एक मुगत रे चाव लालरे ॥
॥ रतन० ९ ॥
चौथा आश्रम उपनीं, तन चरणा में खेद लालरे ।
तो पिण थाणे रह्या नहीं, करण विहार उमेद लालरे ॥
॥ रतन० १० ॥
गांव नगर पुर विचरतां, करता धरम उपदेश लालरे ।

राग काफीरी—किण डारीपिचकारी रे।

रतनमुनि री वाणी रे, माने लागे प्यारी ॥ टेर ॥

पूज्य रतन सम भरतक्षेत्र में, विरला छे: अणगारी रे
॥ मा० १

अंग उपंग मूल उर धरिया, ये ज्ञान तणा भंडारी रे
॥ मा० २

सीतल चंदन सूं अति अधिका, मेटे मिथ्यात अंधारी रे
॥ मा० ३

श्रावक वृंद फावे मुख आगल, मानो केसर क्यारी रे
॥ मा० ४

चहुँ दिश मांहीं कीरत पसरी, ए प्रतिबोधे नरनारी रे
॥ मा० ५

'हमीरमल' सदगुरु वाणी पर, पलक पलक पर वारी रे
॥ मा० ६

—पूज्य श्री हम्मीरमलजी।

ढाल—उज्जैन गढ़ म्हाने ले चालो-

रतनचंद मुनि दीपता, म्हारा सारे वंछित काज जी ॥रतन०।
भवि सारै आतम काज जी ॥ रतन० टेर ॥

पूज्य गुमानचन्दजी गुरु पाया, मिथ्या मत कियो दूर जी ।
जगत सुखां ने छाँड ने जी, भल हुआ संजम नै शूर जी
॥ रतन० १ ॥

स्वमति परमति सब घट भीतर, सप्त नयां चित्त धारजी ।
पाखंड मतिकु खंडन करे हैं, घाले धर्म तंत सार जी
॥ रतन० २ ॥

क्रोध, मान, माया, लोभ पतलो, दुति पट्कर्म विडार जी ।
सप्तबीस गुण-धार शिरोमणी, मोटा मुनि अणगार जी
॥ रतन० ३ ॥

नेत्र, श्रवण, नासा अतिसुन्दर, देह पुण्य की खान जी ।
देखत नयन, लोचन नहीं धापै, चन्द चकोर ज्यूं जाण जी
॥ रतन० ४ ॥

संवत् अठार वर्ष अस्से मे, नागोर शहर में आयजे ।
"दौलतराम" चरणा रो चाकर, लुल लुल लागे थांरे पाय
|| रतन० ६

--मुनि श्री दौलतरामजी

४

चाल–घडल्यारे सुगण सुनार बेसर सोना की

देही दिप दिप तेज दिनंद, वदन मोहै जिमचंद ।
सतगुरु उपगारी ए, पूज रतन मुनि श्रेन ।। सत० १ ।।
घन गरजारव वेण अमोल, कौन सकै गुण तोल
|| सत० २
सावज रो कीधो परिहार, ले निरदोषण आहार
|| सत० ३
चार भला कीधा निरदोष, निजर लगी ज्यांरी मोख
|| सत० ४

ंच महाव्रत निरतिचार, सुमत गुपत सुख कार
॥ सत० ५ ॥
चाल भली गज हस्ती जेम, थांरे मुक्त रमण सुं प्रेम
॥ सत० ६ ॥
निरखत नैन धापे नहीं कोय, रतन सूरत मुख जोय
॥ सत० ७ ॥
सत गुरुजी री मैंमा विसेख, म्हारी जीभ छै एक
॥ सत० ८ ॥
समगत जोत उद्योत प्रकास, म्हारे कियो मिथ्यात रो नास
॥ सत० ६ ॥
'मंगतूला' मगनां मान मोड़, वन्दै बेकर जोड़
॥ सत० ६ ॥
समत चोरासी नागोर सहर, आप राखो अविचल महर
॥ सत० ११ ॥

—सतीजी श्री मंगतुलाजी, मगनाजी

पूज्य रतनचंदजी गुरु भेट्या, मारैं समगत जोत उद्योत करं
॥ धन० १

पंच महाव्रत रूड़ा राखे, सुमत गुपत चित सुध धरी ।
दोष बयालीस टाल सिरोमण, इम्रत वाणी पेम भरी
॥ धन० २

सांवरी सूरत मोहनी मूरत, जनम जरा रोग सोग मरी ।
भव जीवां नें सतगुरु तारें, निरखत पातक दूर टरी
॥ धन० ३

भरत खेतर में पूज रतन सम, केइयक विरला साध सरी ।
बुध अतिसुद्ध कला समझावण, मारो हरखत हिवड़ो नैंण ठ
॥ धन० ४

तेज प्रताप पूज रो भारी, पाखंडी सब थरक हरी ।
देश प्रदेशां सतगुरु सैंसा, सिख सोभैं ज्यांरी मोल्यांरी ल
॥ धन० ५

एक जीभ सुं गुण कुण गावै, दीधी एक संतोष जरी ।
'मंगलूला' मगना री यह विनती, सतगुरु सरणे आन खरी
॥ धन० ६ ॥
–सतीजी श्री मंगलूलाजी

५
तर्ज–होरी

मूसा तोय नेक लाज नहीं आइरे ॥ मूसा० आंकड़ी ॥
ढूंढ ढुंढालारा बाहण उंदरा, ते आ कांई कुबद कमाइरे
॥ मूसा० १ ॥
मूसी कहे सुणों नी बालम, हूँ नहीं थारी लुगाई ।
तिरण तारण है रतन मुनीसर, ज्यांरी ते एडी चाईरे
॥ मूसा० २ ॥
मूसो तो हिवे उठ बोल्यो, सुण हे मूसी लुगाई ।
भाई बाई मेलियो छो मोकूं, जब मैं जीभ लगाई
॥ मूसा० ३ ॥
भाई बाई तो इण विधि बोल्या, सुण रे मूसा भाई
अरजी फेर करां छां म्हे तो, पूज जी जेंपुर जाई रे
॥

मैं अति दीन दया निधि तुम हो, नयन उघार निहारो ॥र०
संभुनाथ कूं लेरां लेलो, तो जानूं हेत तिहारो ॥ र० ३

७

राग–तेहीज

कब कर हो मन मेरो, ऐसो ॥ टेर ॥
तट दे तूटे नेह कुटंब सौं, साधन बीच बसेरो
॥ ऐसो० १
मात पिता बांधव सुत नारी, घाल रह्या छे घेरो ।
संभुनाथ को अपनो करलो, रतन मुनि थांरो चेरो
॥ ऐसो० २

८

राग–तेहीज

रहो मन, रतन मुनी के पास ॥ टेर ॥
पाव पलक की खबर ज नाहीं, निकल जायगा सांस
॥ रहो १

झूठे मात पिता सब झूंठे, झूठे महल आवास ।
संभुनाथ के सांचे सतगुरु, सांची है जिन आस ॥ रहो २ ॥

९
राग–तेहीज

सतगुरु कब आवै सुनरी ।
वाणी सुण्यां बिना रतन मुनी री, वृथा जनम ही जावे ॥१॥
दिन नहीं चैन, रैन नहीं निद्रा, भोजन मूल न भावे ।
संभुनाथ के स्वामि देख्यां बिनु, जिवड़ो अति दुःख पावे
॥ सत० २ ॥

१०
चाल–आजा रे घनश्याम

वारी हो रतनेस पूज, दैण सुखकारी,
मेटियो मिथ्यात भ्रम आपदा सारी ॥ टेर ॥
नैन वैन अैन सोभै सूरत है प्यारी,
कहा करूं गुण थोरी, बुध है जी हमारी ॥ वारी० १ ॥
अंग उपंग मूल छेद, ग्यान भंडारी,
नय निखेप भंग जाल, पूरे गुणधारी ॥ वारी० २ ॥
सप्तवीस गुण अगाध, मैंमा भारी,
पाखण्ड कुं दूर करण, आये अवतारी ॥ वारी० ३ ॥

११

रतनमुनि है जूं गुणधारी, ज्यांरी तो क्रांति अतिभारी

॥ रतन० टेर ।

अनेक रवि जेष्ठ के ऊगे, पूज्य कुं परत नहीं पूगें

॥ रतन० १ ।

मूरत ज्यांरी मोहनी कहियें, निहारत नैन छक रहियै ।

देख्यां दुख दूर सब जाई, प्रभु की भक्ति ज्यां पाहि

॥ रतन० २ ।

देखे नहीं ऐसे मुनि नैना, अमी सम है ज्यांरा बैनां ।

जीवन कुं ऐसे समझावे, सुणे सोई पार होय जावे

॥ रतन ३ ।

ज्यांरे है सिख सुखकारी, ज्यांरी तो बुद्ध अति भारी ।

त्रिभुनाथ चरन को चेरो, राखो पूज मोय अब नेरो

॥ रतन ४ ॥

पूज्य श्री रतन चन्द जी म०
के ५४ चौमासे

दोहा— कुल बडजाती श्रावगी उपना श्री रतनेश ॥
भव्य जीवां तारण तिरण, चाला देश विदेश ॥ १ ॥
संजम सवदे वर्ष का, लीधो जग सुख त्याग ॥
चौमासा चौपन किया, ते दाखूं वर राग ॥ २ ॥

ढाल— तर्ज–मोटी हो जग में मोहनी ।
शाहपुरे बडोदरे, भीलाडे हो दोय तीन चौमास ।
कीधा देश मेवाड़ में, बुद्धि निर्मल हो पढ़िया गुरु पास ॥ १ ॥
रतन मुनिवर मोटका, जिन मार्ग को कीधो उद्योत ॥
स्यां पुरुषों के प्रसाद से. मैं पायी हो शुद्ध समकित ज्योत ॥ २ ॥
महामन्दिर बडलू रियां, रायपुर और जयपुर शुभ ठाम ॥
एक एक पांचो नगर में, चौमासे हो लीधो विसराम ॥ ३ ॥
चार चार अजमेर मेडते, किशनगढ़ में हो दो तीन पीपाड़ ॥
दश नगिना इग्यार पाली किया, जोधाणे हो चौमासा चार ॥४॥
ए चौपन चातुर्मास में, भविजन ने हो तार्या समझाया ॥
पुर पाटन विचरिया घणा, बहु पावन हो कीधी मुनिराय ॥ ५ ॥
मुनि मंडल नागोर में, चौमासो हो चौपनमों किधो ॥
[illegible]

बाल ब्रह्मचारी मोटा तपस्वी, निर्लोभी हो उत्तम गुण खान।
धर्म आचार्य माहरा, जांके दर्शन से होवे क्रोड कल्याण ॥ १
धर्मार्थ पत्र जाणके मत जावो हो कह्यो भूपाल ॥
सुनकर लक्षण निरख्या, गुरु वन्दे हो निज नयन निहार ॥ १
बड़े शिष्य से चर्चा करी, गुरु आगल हो विनवे जिलमेश।
पूज्य जोधाणे पधारिए, विचरण को हो अवसर नहीं लेश। १
श्री गुरु कहे जाणी जासी, सुन समज्या हो मन हर्ष अपार॥
गुरु वन्दी घर आविया, लारे से हो मुनि कीधो विहार ॥ १३
चैत्र कृष्ण पक्ष अष्टमी , जोधाणे हो दाखल रतनेश ॥
विनय चन्द कहे धन्य पूज्यको, ज्यां मुनियां हो छेलो उपदेश। १
ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी, पूज्य किये उपवास ॥
तन में व्यापी पाणगे, दाहज्वर की त्रास। १ ॥
बड़ा शिष्य नाम हमीर जी, तेरस रात विचार ॥
सागारी अनशन दियो, शरणा चार सुनाय ॥ २ ॥
